भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 3 | **जून-जुलाई** 2002 | **अंक** 6-7

जनभाषा हिंदी और जनसेवा

हिन्दी भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा है और अब अंतर्राष्ट्रीय आंकड़े भी यह बता रहे हैं कि विश्व में चीनी भाषा के बाद हिन्दी बोलचाल की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। आंकड़ों के अनुसार दुनिया में 87.4 करोड़ लोग चीनी, 36.6 करोड़ लोग हिन्दी और 34.1 करोड़ लोग अंग्रेजी बोलते हैं। लेकिन ये आंकड़े विश्वसनीय नहीं लगते। वजह यह, कि भारत की आबादी सौ करोड़ की संख्या पार कर चुकी है और उसमें क्या केवल 36 प्रतिशत लोग ही हिन्दी बोलते हैं? यह संख्या उनकी तो हो सकती है जो हिन्दी को अपनी मातृभाषा मानते हैं। लेकिन सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी समझने और बोलने वालों की संख्या कहीं अधिक है।

दरअसल हिन्दी आर्य भाषा-परिवार की शाखा है और देश की अनेक प्रमुख भाषाएँ, जैसे उर्दू, मराठी, गुजराती बंगला, पंजाबी, सिंधी आदि भी इसी भाषा-परिवार की हैं। इन भाषाओं के लोग भी हिन्दी ठाठ से समझते हैं और अपनी-अपनी शैली के हिसाब से बोलते भी हैं। दक्षिण भारत में केवल तमिलनाडु को छोड़ कर अन्य तीनों राज्यों में हिन्दी पढ़ने, समझने और बोलने वालों की संख्या भी तेजी से बढ़ती जा रही है। यदि निष्पक्ष आकलन किया जाए तो हिन्दी समझने और बोलने वालों की संख्या 90 करोड़ से कम नहीं होगी। लेकिन विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की सम्पर्क भाषा होने के नाते हिन्दी जिस गौरव की अधिकारिणी है, उससे उसे वंचित रखने का प्रयास अभी भी बदस्तूर जारी है।

इस प्रयास अथवा षडयंत्र के लिए स्कूल की परीक्षा पद्धति गढ़ने वालों से लेकर संघ लोक सेवा आयोग तक वे सभी जनता को दोषी दिखते हैं जो सत्ता की सभी सुख-सुविधाओं पर अपना एकाधिकार बनाए रखने की लोकतंत्र-विरोधी सामंतवादी मानसिकता से ग्रस्त हैं। हिन्दी अथवा स्थानीय भाषा में वोट माँगने वाले वरिष्ठ अधिकारियों का चयन करने वाला संघ लोक सेवा आयोग तो हिन्दी का विरोध और अपमान करने के कारण विश्व के सबसे लम्बे धरने के लिए चर्चित हो चुका है। प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम से लिखने की अनुमति उसने कई साल बाद ही दी। आयोग की भारतीय-भाषा विरोधी नीतियों के खिलाफ उसके मुख्यालय के बाहर कई साल तक चले धरने में समय-समय पर अटल बिहारी वाजपेयी, विश्वनाथप्रताप सिंह, ज्ञानी जैल सिंह आदि नेता भी शरीक हुए, लेकिन आज भी हाल यह है कि भारतीय प्रशासनिक सेवा आई०ए०एस० की लिखित परीक्षा में हर प्रतियोगी को अंग्रेजी के प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण होना पड़ता है। मतलब यह, कि वह हिन्दी का ज्ञाता हो तो हो, उसे अंग्रेजी का भी अच्छा ज्ञान होना जरुरी है। साक्षात्कार में यदि कोई फर्राटे से अंग्रेजी नहीं बोल पाता है तो उसका सपना चकनाचूर हो जाता है। सभी जानते हैं कि अपने यहाँ फर्राटे से अंग्रेजी केवल वे बोल पाते हैं जो भारी-भरकम फीस वाले पब्लिक स्कूलों में पढ़े हुए होते हैं। हमारे संविधान में अवसरों की समानता के मूल अधिकार का संघ लोक सेवा आयोग उल्लंघन करे, यह हमारे लोकतंत्र के लिए किसी त्रासदी से कम नहीं है। इस प्रणाली से निकले अफसर कैसे 'जनसेवक' होंगे, किस हद तक जनता से संवाद बना पाएँगे, यह सहज ही समझा जा सकता है।

—'हिन्दुस्तान' से साभार

अंग्रेजी और हमारी विरासत

पिछले दिनों वाराणसी के एक महाविद्यालय में राजस्थान के राज्यपाल न्यायमूर्ति अंशुमान सिंहजी ने कहा ''अंग्रेजों ने अपनी शासन व्यवस्था को मजबूत करने के लिए देश में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली प्रारम्भ की, जिसमें अंग्रेजी और अंग्रेजियत को महत्ता दी गयी। उनका दूसरा उद्देश्य हमारी सांस्कृतिक विरासत को कमजोर करके पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षण उत्पन्न करना था।''

आज़ादी के बाद भी हमारे नेताओं ने अंग्रेजी ही नहीं अंग्रेजी (पाश्चात्य) संस्कृति को अंगीकार किया। परिणाम यह हुआ कि हम सतत उस जीवन संस्कृति में ही नहीं भौतिक-आर्थिक चिंतन में भी समर्पित होते गये। भूमंडलीकरण की वैश्विक संस्कृति को हमने अपना लिया। अब यह अनुभव किया जा रहा है कि अंग्रेजी भाषा शासन तंत्र के लिए अपरोक्ष रूप से आवश्यक हो गयी है।

अंग्रेजी की इस अनिवार्यता से जन-सामान्य में अंग्रेजी का व्यामोह बुरी तरह व्याप्त है। गाँव-गाँव में अंग्रेजी स्कूल खुलते जा रहे हैं, स्कूलों के नाम भी अंग्रेजी संतों के नाम पर रखे जाते हैं। इनमें अंग्रेजी अध्यापन करने वाले अध्यापक नीम हकीम खतरे जान डॉक्टरों की तरह होते हैं जो शब्दों का शुद्ध उच्चारण तक नहीं कर सकते उनका अर्थ जानना तो दूर। उनका ज्ञान CAT कैट माने बिल्ली RAT माने चूहा तक ही सीमित होता है। अंग्रेजी ज्ञान का दम्भ लिए ऐसे बालक-बालिका का अपनी संस्कृति की गहराई से दूर गले में टाई लगाए हाफ पैंट-शर्ट और अंग्रेजी जूता पहन उपभोक्ता संस्कृति को समर्पित होते जा रहे हैं।

जिन प्रदेशों ने अपने प्रदेश की भाषा को महत्ता प्रदान की थी, उन्हें भी अंग्रेजी की माँग स्वीकार करनी पड़ी। इस मानसिकता से आज देश में राष्ट्रीयता का विकास नहीं हो रहा है। भौतिकता की दौड़ में नेक विवेक सभी लुप्त हो जा रहे हैं। अंग्रेजी के माध्यम से अधकचरा ज्ञान अपनी भाषा के स्वरूप को भी विकृत कर रहा है। न उन्हें अंग्रेजी भाषा का सही ज्ञान है और न अपनी भाषा का।

हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता और ज्ञान-विज्ञान जो हमारे संस्कृत तथा भाषायी ग्रंथों में सुरक्षित है जो हमारी धरोहर है, उनसे हटकर अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त ज्ञान से हम चमत्कृत होते हैं। जबकि हम अपने देशज ज्ञान से अनभिज्ञ रह जाते हैं। आज आवश्यकता है कि अपने देश की बौद्धिक धरोहर और विरासत को पहचानें और उसे जन-जन तक पहुँचाए तभी देश में सौहार्द उत्पन्न होगा और समृद्धि आयेगी। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

स्मृति-शेष

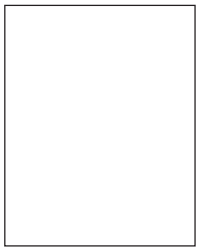

पद्मश्री प्रो० विश्वनाथ वेंकटाचलम्

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पूर्व कुलपति एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान **प्रो० विश्वनाथ वेंकटाचलम्** का चेन्नई में 7 जून को निधन हो गया। विभिन्न पदों से अवकाश प्राप्त करने के बाद प्रो० वेंकटाचलम् ने काशी में सिगरा पर दाऊजी कम्प्लेक्स में छठें तल पर फ्लैट लेकर रहते थे। सितम्बर 1986 में उज्जैन से वे संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति होकर आये थे। अत्यन्त मृदुभाषी, उसी समय काशी गोशाला जिसका मैं मंत्री था शताब्दी समारोह मनाया जा रहा था। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंहजी मुख्य अतिथि होकर आये। एयरोड्रम पर वेंकटाचलमजी से परिचय हुआ, उन्होंने कहा कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० आर०पी० रस्तोगी से उनका परिचय नहीं है, परिचय करा दूँ। डॉ० रस्तोगी गोरखपुर विश्वविद्यालय से ही मेरे परिचित आत्मीय थे। मैं उन्हें उनके पास ले गया और उनसे परिचय कराया। वेंकटाचलम्जी बड़े प्रसन्न हुए, मेरे अभिन्न मित्र बने और अपने कार्यकाल में विश्वविद्यालय के प्रेस तथा प्रकाशन की व्यवस्था के सम्बन्ध में परामर्श करते रहते थे। बाद में वेंकटाचलम्जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में राष्ट्रपति के प्रतिनिधि और कार्यकारिणी समिति के सदस्य रहे।

उन्होंने उज्जैन के अपने मित्र डॉ० मोहन गुप्त, आई०ए०एस० (अवकाशप्राप्त) के शोध ग्रन्थ 'महाभारत का काल निर्णय' के प्रकाशन के लिए डॉ० गुप्त से मेरा परिचय कराया। पुस्तक पूरी हो गई उसकी भूमिका वेंकटाचलम्जी को लिखनी थी, किन्तु व्यस्तता के कारण वे लिख नहीं पा रहे थे। 4 जून को उन्होंने अपने दाऊजी काम्प्लेक्स से फोन किया कि वे कल चेन्नई जा रहे हैं और वहाँ से भूमिका लिखकर भेज देंगे। इसी सन्दर्भ में उन्होंने महाभारत सम्बन्धी एक पुस्तक मँगाई जो उन्हें भिजवा दी।

एक मास पूर्व उन्होंने फोन पर बताया था कि वे एक वर्ष के लिए अपने दीक्षा गुरु शृंगेरीपीठ शंकराचार्यजी के आश्रम में जाकर रहेंगे। संस्कृत विश्वविद्यालय में उनके कार्यकाल में काँचीकामकोटिपीठ के शंकराचार्यजी ने वाग्देवी के मन्दिर का निर्माण कराया था। वे 5 जून को गंगा कावेरी से सपरिवार चेन्नई गये। चेन्नई में अपनी पुत्री और दामाद के घर गये। तभी अचानक उन्हें सीने में दर्द हुआ। उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाया गया, जहाँ चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

डॉ० मोहन गुप्त, उज्जैन से मैंने फोन पर बात की उन्होंने बताया कि वेंकटाचलम्जी को यह लग रहा था कि उनका मारकेश निकट है, इसलिए वे शृंगेरीपीठ शंकराचार्यजी के आश्रम में शेष समय अध्ययन में व्यतीत करना चाहते थे। किन्तु मारकेश अनुमान के पूर्व ही आ गया और वे शृंगेरी नहीं पहुँच सके।

प्रो० विश्वनाथ वेंकटाचलम् सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में सितम्बर 1986 से सितम्बर 1989 तथा दूसरी बार अक्टूबर 1992 से दिसम्बर 1995 तक कुलपति रहे। दिल्ली में स्थित भोगी लाल लहर इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोटेक्नालजी के वर्ष 1990 में वे निदेशक हुए और दो वर्ष तक इस पद पर रहे। 1995 में जब वे सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति थे तभी उन्होंने दिल्ली स्थित लालबहादुर शास्त्री विद्यापीठ के कुलाधिपति का पदभार भी सँभाल रखा था। यहाँ पाँच वर्ष का कार्यकाल पूर्ण कर वे कौंसिल ऑफ इण्डियन फिलासफी एण्ड रिसर्च (आईसीपीआर) के चेयरमैन बने। इसके साथ ही वे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त किये गये। दो वर्ष तक यहाँ अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद स्वास्थ्य के कारण कुलपति पद से त्यागपत्र दे वर्ष 2001 में आई०सी०पी०आर० का कार्यकाल पूरा किया।

उनके निधन से संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् और सर्वोपरि अत्यन्त सरल, सद्भावी, मृदुभाषी व्यक्ति हमारे बीच नहीं रहा। उनके निधन से हुई क्षति पूरी नहीं की जा सकती। उनकी स्मृति सदैव बनी रहेगी। उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए काशी विश्वनाथ से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनके परिवार को यह शोकवहन की क्षमता दें। — **पुरुषोत्तमदास मोदी**

यशपाल की पत्नी मृत्युशय्या पर

शहीद भगत सिंह के साथी उपन्यासकार तथा क्रान्तिकारी यशपाल की पत्नी 91 वर्षीया **प्रकाशवती पाल** लखनऊ में महानगर में अपने आवास में मृत्युशय्या पर पड़ी हैं। वे अपनी दृष्टि और स्मृति दोनों खो चुकी हैं। उनकी बहू मीना आनंद उनकी देखभाल कर रही हैं। 31 जनवरी 1912 को प्रकाशवतीजी का जन्म हुआ, अगस्त 1936 में यशपालजी से विवाह हुआ। वे हिन्दूस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी में शामिल हुईं और क्रांतिकारियों के बीच दुर्गा भाभी और सुशीला दीदी के साथ काफी लोकप्रिय रहीं।

उपेन्द्र झा व्यास

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित मैथिली के लेखक 85 वर्षीय **उपेन्द्र झा व्यास** का 31 मई को पटना में निधन हो गया।

कैफी आज़मी नहीं रहे

'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों' का उद्घोष करने वाले इंकलाबी शायर **कैफी आज़मी** ने 10 मई 2002 को मुम्बई के जसलोक अस्पताल में अन्तिम साँस ली। आजमगढ़ में 2 फरवरी 1925 को जन्मे 77 वर्षीय कैफी साहब हिन्दी और उर्दू दोनों में समान रूप से लोकप्रिय रहे हैं। 'गम किसी दिल में सही मिटाना होगा, आज हर घर में दिया मुझको जलाना होगा, हमको हँसना है तो औरों को हसाना होगा' के गायक की स्मृति वर्षों तक बनी रहेगी। कैफी आज़मी साहब के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

प्रो० हीरालाल तिवारी

जिसने असम में हिन्दी के प्रचार प्रसार, अध्ययन अध्यापन में अपना जीवन समर्पित कर दिया उन **हीरालाल तिवारी** का 30 अप्रैल 2002 को गाजियाबाद में निधन हो गया। 2 मई 1930 को तहसील केराकत गाँव सिरोनी जिला जौनपुर में जन्म। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम०ए०, पी-एच०डी०। 1964 में प्राग ज्योतिष डिग्री कालेज असम में अध्यापन प्रारम्भ किया और गौहाटी विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफेसर पद से सेवा मुक्त हुए। असम में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने की दिशा में तिवारीजी का महत्वपूर्ण योगदान था। उनका शोध ग्रन्थ 'गंगा घाटी के गीत' विश्वविद्यालय प्रकाशन ने सन् 1980 में प्रकाशित किया था। उनके प्रति कहा जाता है—''डॉक्टर मोशाई को गोमती ने जन्म दिया, गंगा ने विद्या दी, ब्रह्मपुत्र ने रोटी दी और हिंडन ने शरीर से मुक्ति दी।''

सरिता सम्पादक विश्वनाथ

स्वतंत्रता के पश्चात् दिल्ली से लोकप्रिय पत्रिका के सम्पादक-प्रकाशक **विश्वनाथ** का 17 मई को निधन हो गया। वे 85 वर्ष के थे। उन्होंने दिल्ली प्रेस स्थापित किया और हिन्दी, अंग्रेजी में विविध पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं।

अनुपम प्रकाशन, पटना के भीमसेन नहीं रहे

4 मई 2002 को अनुपम प्रकाशन, पटना के संस्थापक **श्री भीमसेन** का निधन हो गया। भीमसेनजी राजकमल प्रकाशन के प्रथम सहयोगियों में थे। उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

डॉ० महादेव साहा

सुविख्यात भाषाविद्, हिन्दी और बांग्ला भाषा तथा साहित्य के अध्येता **डॉ० महादेव साहा** का 85 वर्ष की अवस्था में 14 अप्रैल को दिल्ली में निधन हो गया। श्री साहा चलते-फिरते विश्वकोश थे।

वे जनवादी लेखक संघ के संस्थापकों में थे।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' अपनी तरह का एक महत्वपूर्ण उपक्रम है और यह मेरे लिए प्रीतिकर पहलू है कि आप 'लोक' की विस्तृत चर्चा पत्रिका में करवा रहे। — **पीयूष दईया**

रविवार 26 मई 2002 को 'जयशंकर प्रसाद संस्कृति वातायन' के तत्त्वावधान में काशी के प्रमुख होटल क्लार्क्स के शकुन्तला सभागार में आयोजित सभा में 'प्रसाद की प्रासंगिकता' पर भाषण करते हुए राज्यपाल श्रीविष्णुकान्त शास्त्री ने कहा—''प्रसाद के इष्ट देव भगवान शिव थे जिनके लिए उन्होंने लिखा भी था—'अनन्त नील लहरों पर, अचल आसन धर बैठे हो, अखिल विश्व का विष पीते हो, सृष्टि जियेगी फिर से।' सच्ची भक्ति होती है तो इष्ट के गुण भगवान में आने लगते हैं। प्रसाद में भगवान शिव के बहुत से गुण आ गये थे। कष्टों और विपत्तियों की लहरे उन्हें डिगा नहीं सकीं। उन्होंने विरोधों के विष का पान किया लेकिन साहित्य के माध्यम से अमृत की वर्षा करते रहे। कोई रचनाकार जब समय की चुनौती को स्वीकार करते हुए उसका अपनी रचनाओं में जवाब देता है तो वह रचनाएँ समयबद्ध नहीं सार्वकालिक होती हैं क्योंकि आधारभूत मानवीय प्रवृत्तियाँ बदलते हुए काल में भी बहुत कम बदलती हैं। कुछ लोग कहते हैं कि प्रसादजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग नहीं लिया। ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि प्रसादजी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अंग्रेजों द्वारा हमारी संस्कृति को धूमिल करने के प्रयासों का डटकर मुकाबला किया। यह कहीं बड़ी राष्ट्रभक्ति थी।

कामायनी की श्रद्धा एक ही साथ चरित्र भी है और वृत्ति भी। सत् को जो धारण करे वह श्रद्धा है। शारीरिक इन्द्रियाँ संवेग के सत्य को श्रद्धा ग्रहण नहीं करती है। श्रद्धा तर्क से कटती नहीं है। प्रसाद सुखवादी नहीं, आनन्दवादी थे। सुख का विलोम दुख है। लेकिन आनन्द का विलोम नहीं है। प्रसाद की आधारभूत दृष्टि आध्यात्मिक है, उन्होंने अखण्ड आनन्द स्वरूप चेतन को स्वीकारा है। मनुष्य के साथ दो अहं होते हैं। एक अहं जो उसे छोटा बनाता है, अपने तक ही सीमित करता है लेकिन दूसरा उसे सबके साथ जोड़ता है। यह चेतन स्वरूप है। यह अपने में सबको और सबमें अपने को देखने का अहं है। प्रसाद की रचनाओं में इन दोनों का टकराव और तुच्छ अहं का विनाश नजर आता है। प्रसाद सनातन को पुरातन के अर्थों में नहीं लेते थे। उनके लिए नित्य नूतन होते हुए भी जो पुरातन है वह सनातन है।''

राज्यपाल शास्त्रीजी ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों—'प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ' सम्पादक डॉ० किशोरीलाल गुप्त तथा 'राष्ट्रप्रेम के गीत' सम्पादक श्री कृपाशंकर शुक्ल का लोकार्पण भी किया।

प्रारम्भ में वातायन की अध्यक्ष श्रीमती डॉ० रश्मिकुमार ने राज्यपालजी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन तथा धन्यवाद वातायन के उपाध्यक्ष पुरुषोत्तमदास मोदी ने किया। समारोह में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा नगर के अनेक साहित्यकार उपस्थित थे।

प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ

सम्पादक

डॉ० किशोरीलाल गुप्त

मूल्य : 50.00

सानेट अंग्रेजी काव्य की प्रमुख विधा है। इटली निवासी कवि पेट्रार्क ने सानेट का प्रवर्तन किया था। सरटामस वाट नामक अंग्रेज इटली में रहता था। वहीं उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई। उन्होंने लन्दन आकर इस विधा में स्वयं लिखा और अन्य कवियों को सानेट लिखने की प्रेरणा दी। सानेट का प्रचार सोलहवीं सदी में इटली में हुआ था। इसे इटालियन सानेट या पेट्रार्कन सानेट कहा जाता है। हिन्दी सानेट लिखने की शुरुआत लोचनप्रसाद पाण्डेय ने की थी। आलोच्य कृति 'प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ' सानेट यानि चतुर्दशपदी पर ऐसी कृति है जो सानेट के इतिहास इटली से चलकर लन्दन और भारत में बंगला भाषा तथा हिन्दी में पहुँचने तक की यात्रा का संक्षिप्त सर्वेक्षण है और प्रसादजी की 11 चतुर्दशपदियों का संग्रह है।

इस पुस्तिका के संकलयिता-सम्पादक डॉ० किशोरीलाल गुप्त स्वयं सानेट के लेखकों में हैं, उन्होंने इस छोटी से पुस्तक में हिन्दी सानेट का संक्षिप्त इतिहास तथा सानेटकारों का परिचय दिया है। गुप्तजी हिन्दी-अंग्रेजी के अधिति विद्वान और गम्भीर शोधकर्ता हैं। उन्होंने इस छोटी-सी कृति में इंदु, माधुरी, सुधा, मनोरमा, चांद, करुणालय, काननकुसुम तथा अन्य कृतियों से प्रसादजी के सानेटों का संग्रह कर हिन्दी जगत को प्रसादजी के सानेटों से परिचय कराया है।

सानेट पर इस कृति में शोधपूर्ण जानकारी दी गयी है। इस कृति से पाठक सानेट की जानकारी तो प्राप्त करेगा ही साथ ही सानेट का आनन्द भी लेगा। ऐसी उत्तम कृति के लिए डॉ० किशोरीलाल गुप्तजी को अनेक बधाईयाँ तथा सुन्दर मुद्रण तथा नयनाभिराम जिल्द के लिए प्रकाशक भी साधुवाद के पात्र हैं।

— धीरेन्द्रनाथ सिंह

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर `प्रसाद´ : संस्मरणों की अंतरंगता

महादेवी वर्मा ने बहुत पहले 'स्मृति की रेखाएँ' एवं 'पथ के साथी' के माध्यम से संस्मरणों की जो 'वैष्णव परम्परा' शुरू की थी, वह इधर के संस्मरण-साहित्य के 'अति यथार्थवाद' के घटाटोप में लुप्त सी हो गयी थी। यह परम्परा श्री पुरुषोत्तमदास मोदी द्वारा सम्पादित ग्रन्थ 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' से जैसे पुनर्जीवित हो उठती है। इन संस्मरणों से न केवल 'प्रसाद' के जीवन की बहुविध झांकियाँ दृष्टिगोचर होती हैं बल्कि उनकी 'रचनात्मकता' की पुनर्व्याख्या के लिए अनेक सूत्र भी मिलते हैं।

पुस्तक का पहला संस्मरण डॉ० राजेन्द्रनारायण शर्मा का है। पं० सीताराम चतुर्वेदी, ज्ञानचन्द्र जैन एवं रायकृष्णदास जैसे इने-गिने लोगों में शर्मा जी हैं जिन्होंने 'प्रसाद' का, सान्निध्य प्राप्त किया था और सौभाग्य से ये सभी उस 'महामानव' की कथा सुनाने के लिए हमारे बीच में अभी उपस्थित हैं। शर्माजी के संस्मरण से ज्ञात होता है कि 'प्रसाद' में गम्भीरता के साथ-साथ शिष्ट हास्य का भी अद्‌भुत समन्वय था। होमियोपैथी की दवाओं का उनके द्वारा किया गया विद्रूप इस तथ्य का उदाहरण है। शर्माजी की भाषा संस्मरण में स्वयं भी जैसे एक नयी अर्थवत्ता ले लेती है। उदाहरणार्थ—''घर के गृह-चिकित्सक की उपचारविधा, कुलवधू का रूप और जीवित कवि का काव्य किसी बिरले को ही सुहाता है'' (पुस्तक-पृ० 21)। रायकृष्णदास 'प्रसाद' के उन मित्रों में से थे जिनसे उनका बौद्धिक संवाद चलता रहता था। यह सर्वमान्य तथ्य है कि रायकृष्णदास ज्ञान के भण्डार थे। उधर 'प्रसाद' का अध्ययन तो अतुलनीय था ही। एक ज़माने में हिन्दी कहानी में 'प्रसाद स्कूल' की बड़ी चर्चा रहती थी। कहने की जरूरत नहीं कि रायकृष्णदास इस स्कूल के एक समर्थ कहानीकार थे। गद्य-गीत वाला प्रसंग जहाँ राय साहब की ईमानदारी का द्योतक है, वहीं 'प्रसाद' के बड़प्पन का भी।

विनोदशंकर व्यास भी 'प्रसाद स्कूल' के लेखक थे, 'मेधुकरी' जैसे एतिहासिक संग्रह के सम्पादक थे लेकिन इन सबसे बढ़कर वह 'प्रसाद' के 'हमप्याला-हमनिवाला' थे। ('प्रसाद' के देहावसान के बाद 'उग्र' ने यह स्थान ले लिया)। 'दिनरात' पुस्तक लिखने के कारण विनोदशंकर व्यास की बड़ी आलोचना हुई थी; यह संस्मरण बताता है कि व्यासजी का 'प्रसाद' के प्रति कितना अगाध प्रेम था।

शिवपूजन सहाय स्वयं तो एक महत्वपूर्ण लेखक रहे ही हैं, 'निराला', 'उग्र' आदि के अभिन्न मित्र भी रहे हैं। उनके संस्मरण से 'प्रसाद' के व्यक्तित्व के ऐसे पहलू सामने आते हैं जिनसे हिन्दी साहित्य संसार का परिचय नहीं था। रामवृक्ष बेनीपुरी का संस्मरण बताता है कि 'प्रसाद' ने न केवल शिवपूजन सहाय की नई शादी कराई बल्कि बारातियों को पिटने से भी बचाया। जैनेन्द्र का इण्टरव्यू बताता है कि उनकी नज़र में 'प्रसाद' अकेले बड़े नास्तिक लेखक थे। यह वाक्य विवाद को पैदा करने में समर्थ है।

केशवप्रसाद मिश्र 'कामायनी' पर मुग्ध हैं। वह बताते हैं कि वैसा महाकाव्य 'न भूतो न भविष्यति'। केशवप्रसादजी हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के यशस्वी अध्यापक तो थे ही, 'कामायनी' का 'अध्यापन' भी ऐसा करते थे कि नगेन्द्र का 'रस सिद्धान्त' मूर्त हो उठता था। नंददुलारे वाजपेयी 'प्रसाद' पर पूरी किताब लिखकर अपनी श्रद्धा व्यक्त कर चुके थे। उनका संस्मरण उनके श्रद्धाभाव को व्यक्त करता है।

'पुष्प की अभिलाषा' वाले माखनलाल चतुर्वेदी जब 'प्रसाद' के बारे में लिखते हैं तो जैसे दो युग सामने आते हैं लेकिन जब महादेवीजी 'प्रसाद' के ऊपर लिखती हैं तो 'आधुनिक मीरा' अपना समस्त हृदय ही जैसे खोल कर रख देती हैं। रामनाथ 'सुमन' यदि 'स्मृति के दीप' जलाते हैं तो हजारीप्रसाद द्विवेदी अपनी 'सहज मुद्रा' में प्रसाद के कवि-कर्म की व्याख्या करते हैं। अमृतलाल नागर की 'लखनवी तहज़ीब' जहाँ प्रसाद को परख कर मुग्ध हो उठती है, वहीं 'उग्र' की 'उग्रता' प्रसाद के आगे नतमस्तक हो उठती है।

इस पुस्तक के अन्त में दिये गये स्फुट संस्मरण व पत्रादि इसकी उपादेयता को और भी बढ़ा देते हैं। पुस्तक के सम्पादक श्री पुरुषोत्तमदास मोदी साहित्य-सम्पादकों की उस मज़बूत लेकिन भूली-बिसरी परम्परा की आख़िरी कड़ी हैं जिसमें दुलारेलाल भार्गव, महादेवप्रसाद सेठ एवं महेन्द्रजी आदि थे। उन्होंने चुन कर 'प्रसाद' के बारे में ऐसे संस्मरण एवं सामग्री दी है जिसका महत्व असंदिग्ध है। प्रसाद के साहित्य के प्रेमीजनों के लिए यह पुस्तक अनिवार्य है—यह कहना अतिशयोक्ति न होगी।

— कुमारपंकज

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर `प्रसाद´
सं० : पुरुषोत्तमदास मोदी
मूल्य : 150 रुपये

— 'हिन्दुस्तान' से साभार

पुरस्कार-सम्मान

प्रसिद्ध साहित्यकार, आलोचक व समाजवादी चिन्तक **श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा** को हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद द्वारा प्रायोजित 'डॉ० प्रभात सम्मान', उत्तर प्रदेश के राज्यपाल विष्णुकान्त शास्त्री ने 27 मई को प्रदान किया। शास्त्रीजी ने संस्कृत साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के उपलक्ष्य में **डॉ० सुरेशचन्द्र पाण्डेय, पं० विश्वनाथ मिश्र, डॉ० शिवकुमार मिश्र,** एवं **प्रो० वशिष्ठनारायण झा** को संस्कृत महामहोपाध्याय की मानद उपाधि से सम्मानित किया। साहित्यकार **यशदेव शल्य** तथा **पं० रेवाप्रसाद द्विवेदी** को भी उपाधि दी जानी थी पर वे उपस्थित न हो सके।

संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान् **डॉ० सत्यव्रत शास्त्री** को उनकी कृति 'रामकीर्ति महाकाव्यम्' पर दो लाख रुपये का रामकृष्ण-जयदयाल डालमिया पुरस्कार प्रदान किया गया।

सुप्रसिद्ध कथाकार **गोविन्द मिश्र** को वर्ष 2001 का सुब्रमण्यम भारतीय पुरस्कार दिया जायगा।

जैन धर्म-दर्शन, संस्कृति व साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए **डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी'** को 'गोम्मटेश्वर विद्यापीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया। डॉ० जैन को यह सम्मान बंगलूर के निकट स्थित श्रवणबेंलगोला जैन तीर्थ क्षेत्र में आयोजित महावीर जयंती के त्रिदिवसीय समारोह में दिया गया। जगद्‌गुरु कर्मयोगी स्वस्ति चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी ने डॉ० जैन की अंगवस्त्रम्, प्रशस्तिपत्र, श्रीफल व ग्यारह हजार रुपये की सम्मान राशि प्रदान की।

गोपीचंद नारंग समेत 3 को इन्दिरा गाँधी फेलोशिप

प्रो० गोपीचंद नारंग, डॉ० आर० सत्यनारायण और **डॉ० सुनीता जैन** को वर्ष 2001 की इन्दिरा गाँधी स्मृति फेलोशिप दने का निर्णय लिया गया। दो वर्षीय फेलोशिप के तहत 12 हजार रुपये की मासिक शुल्क वृत्ति और कार्यालय सहायता के रूप में ढाई हजार रुपये दिये जायेंगे। आकस्मिक खर्चों तथा यात्रा व्यय के रूप में प्रतिवर्ष 25 हजार रुपये का प्रावधान है। प्रो० नारंग को यह फेलोशिप केलाग के पहले 'हिन्दुस्तानी व्याकरण और आधुनिक हिन्दी' तथा उर्दू के लिये इसकी प्रासंगिकता के संदर्भ में एक व्यापक अध्ययन के लिये दी गयी है। डॉ० सत्यनारायण 'भारतीय संगीत की रचनात्मका' में शोध पर काम करेंगे, जबकि डॉ० जैन को यह फेलोशिप 'भारतीय कवि चित्रकार-1900-2000 एक अध्ययन' के लिये दी गयी है।

डॉ० मेहरोत्रा को 'आत्माराम पुरस्कार'

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित भू-विज्ञान विभाग के अवकाशप्राप्त प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष **डॉ० महाराज नारायण मेहरोत्रा** को वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली के सतत प्रचार-प्रसार हेतु केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ने 'हिन्दी सेवी सम्मान योजना' के अन्तर्गत वर्ष 2001 के लिए 'आत्माराम पुरस्कार' से सम्मानित करने का निर्णय लिया है।

डॉ० मेहरोत्रा को उक्त पुरस्कार राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह के तहत राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया जायेगा।

इतिहास का लोक, अन्वेक्षण का आलोक

पुरानी परिभाषा के अनुसार ''अनुभव के आधार पर शिक्षा देनेवाले समाजविज्ञान का नाम इतिहास है।'' यानी इतिहास केवल स्मृतिलेख नहीं है। वह अतीत के अनुभव का साक्षीकरण मात्र नहीं है, उससे शिक्षा लेने की कोशिश भी है। इतिहास विधा के विकास के पूर्व मनुष्य का तत्त्वज्ञान ही नहीं, व्यवहार भी अनुभवशून्य सहज प्रवृत्तियों एवं स्थूल आवश्यकताओं पर आधारित था। इतिहास मनुष्य को उन प्रवृत्तियों के पार गुण दोष की परीक्षा का अवसर प्रदान करता है। अगर इतिहास प्राचीनतम भाषा के साहित्य का होगा तो अधिक अभिनव प्रविधि के उपयोग की माँग करेगा।

इतिहास शब्द का प्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। कहा गया है—''सृष्टि के आरम्भ में जो परम पुरुष उत्पन्न हुआ, उसका अनुगमन इतिहास, पुराण, गाथाओं और नाराशंसियों ने किया।'' यहाँ इतिहास का अर्थ इतिवृत्त है। अपने इस रूप से इतिहास ने बाद में कितने रूप धरे यह तो अनुसंधाताओं की मस्तिष्क वृत्ति पर निर्भर करता गया। पिछली कई सदियों में इतिहास के भिन्न रूप रचे गए और हमारे समक्ष आते रहे। संस्कृत समेत कई भाषाओं के साहित्य का इतिहास भी लिखा जाता रहा। मगर हम आगामी कदम उस बोध से बने इतिहास को मानते रहे जिसने पिछले कदम से आगे बढ़कर पुनरुद्धार की मुद्रा अपनायी। डॉक्टर राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा लिखित 'संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास' विगत इतिहास ग्रंथों से आगे बढ़कर इस भाषा के प्राप्य ऐतिहासिक व नवीन साहित्य का पुनरुद्धार करता दिखता है।

यह पुस्तक 14 अध्यायों में बँटी है और उपलब्ध के समांतर कई अनुपलब्ध तथ्यों, ग्रन्थों का समावेश हम इस पुस्तक में देखते हैं। ग्यारहवें अध्याय में इतिहास की परिभाषा दी गयी है—''इतिहास शब्द का संस्कृत भाषा में अर्थ वह वृत्त है, जो पहले होता आया है और आगे भी होता रह सकता है। पुराण उसकी पुनर्व्याख्या है।'' त्रिपाठीजी ने इसी अध्याय में वात्स्यायन का उदाहरण देकर बताया है कि इतिहास का विषय लोकवृत्त है। लोकवृत्त को समझने और संस्कृत साहित्य की आभिजात्य शास्त्रीयतावादी धारा को परखने के साथ-साथ उन्होंने लोकधारा में सक्रिय रचनाकारों को भी ढूँढा और उनके काव्य की प्रासंगिकता की परख भी की है। त्रिपाठीजी के सामने यह संकट रहा है कि पाँच हजार साल पुरानी इस भाषा के साहित्य को समेटें कैसे? इसके लिए उन्होंने संस्कृत-साहित्य की विकास-यात्रा के चार चरण बनाए। उद्भव काल, स्थापना काल, समृद्धि काल और विस्तार काल। उद्भव काल का समय प्रागैतिहासिक काल से लगाकर पहली सहस्राब्दि तक आता है। इस काल में मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने मंत्रों का साक्षात्कार किया, वैदिक संहिताओं तथा ब्राह्मण ग्रंथों की रचना हुई। लोक साहित्य की एक समृद्ध विरासत भी इसी काल में मिलती है। स्थापना-काल का समय पहली सहस्राब्दि विक्रम पूर्व के एक सहस्र वर्षों का है। इस पूरी सहस्राब्दि में संस्कृत भाषा विश्व के महान साहित्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। इसमें उपनिषद् के अलावा षड्दर्शनों का सामने आना हम देखते हैं। समृद्धि काल का समय विक्रम काल से 1200 तक का है। चिंतन परम्पराओं और विज्ञान की उत्पत्ति इस काल की विशेषता है। महाकाव्यों की वृहत्-त्रयी इसी काल में लिखी गयी। ये थे—किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् तथा नैषधीयचरितम्। कल्हण ने 'राजतरंगिणी' तथा वाल्मीकि और व्यास ने अपने काव्य इसी दौर में लिखे। कई नवीन काव्य विधाओं का सूत्रपात भी इसी दौर में हुआ। विस्तार काल का समय 1200 से लेकर आज तक का है। इसमें व्याख्याओं और टीका पद्धतियों की नयी प्रविधियाँ विकसित हुईं। काव्यशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में कई बुनियादी ग्रंथ लिखे गए। मम्मट से लेकर पंडित राज जगन्नाथ जैसे विचारक इसी काल की देन हैं।

पुस्तक से हमें संस्कृत भाषा के बारे में भी सूचनाएँ मिलती हैं। संस्कृत के दो रूप हैं—वैदिक तथा लौकिक। प्राचीन काल में इसे छांदस तथा भाषा कहा जाता था। 'संस्कृत' संज्ञा का प्रयोग परवर्ती काल में हुआ। पाणिनी ने इसके लौकिक रूप को भाषा ही कहा है। रामायण में हनुमान दोनों प्रकार की संस्कृत सहज रूप से बोल सकते थे। हनुमान को व्याकरण का अच्छा अध्ययन था। वे व्याकरण के भी अच्छे ज्ञाता थे, इसका अहसास राम के साथ हुए उनके संवादों से होता है। वाल्मीकि से पूर्व भी संस्कृत कवियों ने अपने समय की बोली जाने वाली भाषा का स्पष्ट साक्ष्य अपने काव्य में दिया है। इनमें से कई ने लोकोक्तियों और मुहावरों का भी प्रयोग किया है। हिन्दी में एक मुहावरा है—ठेंगा दिखाना। वाल्मीकि ने इसी के समतुल्य एक मुहावरा संस्कृत में प्रयुक्त किया है—देवमार्ग दर्शित:। सुंदरकाण्ड के 62वें तथा 63वें सर्गों में तीन बार इस मुहावरे का प्रयोग है। इन प्रसंगों का अन्वेषण कर राधावल्लभजी ने अपने इतिहास को समृद्ध बनाया है।

इस पुस्तक में अनेक ऐसे श्रेष्ठ काव्यों का परिचय भी जोड़ा गया है, जो अब तक उपेक्षित या अल्पचर्चित रहे हैं। बुद्धघोष का 'पद्यचूडामणि' महाकाव्य, कालिदास और परवर्ती महाकाव्यों के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है, जिस पर अपेक्षित विवेचन त्रिपाठीजी ने किया है। पद्यचूडामणि में दस सर्ग तथा 641 पद्य हैं। इसके नायक बुद्ध हैं। नायिका के चरित्र का इसमें अभाव है। त्रिपाठीजी ने लिखा है—''सौंदर्यबोध तथा कल्पनाओं की अभिरामता की दृष्टि से पद्यचूड़ामणि अश्वघोष के महाकाव्यों की अपेक्षा अधिक परिष्कृत और आकर्षक है।'' पूर्व के संस्कृत साहित्येतिहासों में इस ग्रन्थ का जिक्र नहीं मिलता। इसी तरह राजा भोज के समय में लिखा गया 'चक्रपाणिविजय' एक महत्त्वपूर्ण महाकाव्य है। इसके रचयिता भट्ट लक्ष्मीधर को माघ, भारवि जैसे श्रेष्ठ रचनाकारों के समकक्ष त्रिपाठीजी ने रखा है। लक्ष्मीधर भोज की सभा में गए थे, पर वहाँ उनके कवित्व की उपेक्षा हुई। इससे खिन्न होकर वह राजदरबार छोड़कर चले आए। चक्रपाणिविजय में बीस सर्ग हैं। इसमें बाणासुर की पुत्री तथा कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध के प्रेम और विवाह की सरस कथा है। लक्ष्मीधर की विशेषता त्रिपाठीजी ने बतायी है कि वे वैदर्भी रीति के सरस कवि हैं। सूर्यास्त तथा अंधकार के उनके वर्णन, भारवि और माघ के वर्णनों को भी पीछे छोड़ देता है। लक्ष्मीधर के महाकाव्य की चर्चा संस्कृत साहित्य के इतिहासों में प्राय: नहीं की जाती है।

संस्कृत में लोकजीवन से जुड़ा काव्य रचने में योगेश्वर का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। उनकी रचनाओं में ग्रामजीवन और निम्नवर्ग की स्थितियों का वर्णन मिलता रहा है। इनका समय नवीं शताब्दी है। इनकी कविता के विषयों में आदिवासी जन, किसान-मजदूर और सामान्य जीवन बिताने वाले लोग रहे हैं। वर्षा के समय जब घर चू रहा है तो दरिद्र गृहिणी घर को बचाने के लिए क्या-क्या करती है इसे योगेश्वर इस तरह बताते हैं—

सक्तून शोचति सम्प्लुतान् प्रतिकरोत्याक्रन्दतो बालकान्,
प्रत्युत्सिञ्चति कर्परेण सलिलं शय्यातृणं रक्षति।

अर्थात् सत्तू भींग कर बह गया है और वह उसका शोक मना रही है। बच्चे चिल्लपों कर रहे हैं, और वह उन्हें चुप करा रही है। घर में फैले पानी को वह पोंछे से सुखा रही है। पुआल के बिस्तर को बचा रही है। योगेश्वर का यह काव्यांश हजार वर्ष से अधिक समय बाद भी किसी ग्राम के जीवंत यथार्थ का प्रत्यक्ष प्रमाण है। हालांकि योगेश्वर की स्वतंत्र रूप से कोई काव्यकृति उपलब्ध नहीं, इसीलिए इतिहास में दाखिले की उन्हें मुश्किल रही होगी। मगर त्रिपाठीजी के इतिहास में उनकी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति है। यह कोशिश, संस्कृत इतिहासकारों की उन कठोर नियमावलियों का तिरस्कार भी है जिसके तहत केवल श्रेष्ठिवर्ग के साहित्य को ही वे इतिहास में दाखिल किए जाने योग्य मानते रहे हैं। भीमट और अनंगहर्ष जैसे श्रेष्ठ नाटककारों के कृतित्व की भी उपेक्षा होती रही है। इस पुस्तक में उनका जिक्र है। भीमट का एक नाम भीमदेव था। वे कालंजर के राजा थे। इनके पाँच नाटक बताए जाते हैं जिनमें से केवल तीन का जिक्र मिलता है। 'स्वप्नदशानन' उनका चर्चित नाटक रहा। भीमट के नाटक अब लुप्त हैं किन्तु राजशेखर जैसे प्राचीन आचार्यों ने जिस तरह उनकी प्रशंसा की है उससे लगता है कि नाट्य जगत में उनकी बहुत प्रतिष्ठा थी।

संस्कृत के प्रमुख नाटकों का विवेचन त्रिपाठीजी ने नवीन दृष्टि से किया है। साथ ही रंगमंचीय प्रतिमानों के अनुसार नाटकों का मूल्यांकन किया है। कहीं-कहीं उनकी भाषा आधुनिक समीक्षकों को पछाड़ती हुई प्रतीत होती है। ऐसा कई प्रसंगों में उपस्थित होता है। 'मृच्छकटिक' नाटक पर उनकी टिप्पणी देखें—

''मृच्छकटिक अँधेरे और उजाले का एक खेल है। हम इसके मुख्य पात्रों को अँधेरे के बीच रोशनी तलाशते हुए देखते हैं। नांदी पद्य में शून्य में खोए शिव का वर्णन है।'' इस तरह हम देखते हैं कि त्रिपाठीजी नाटकों में निहित गूढार्थों को भाषिक क्रीड़ा की सार्थकता के साथ हमारे समक्ष उपस्थित करते हैं। उन्होंने नाटकों अथवा रूपकों को रंगमंच के परिप्रेक्ष्य में ही समझा और परखा है। उन्होंने संस्कृत के महान नाटककारों की रंगदृष्टि को काफी बोधगम्य बना कर प्रस्तुत किया है।

प्राय: यह देखा गया है कि दसवीं सदी के पश्चात् संस्कृत काव्य के इतिहास को पश्चिमी विद्वानों ने ह्रास युग मानकर उस पर मौन साध लिया। इसी तरह मध्यकालीन गद्य को भी अनदेखा किया। इन सभी पहलुओं पर इस पुस्तक में ध्यान दिया गया है। दसवीं सदी के बाद के नाटककारों में ही अनंगहर्ष का जिक्र मिलता है। उनके दो नाटकों का जिक्र मिलता है—तापसवत्सराज तथा उदात्तराघव। दूसरा नाटक अप्राप्य है। अनंग पर भवभूति का प्रभाव मिलता है। संस्कृत में गद्यलेखन की परम्परा पर भी विधिवत् चर्चा इस पुस्तक में मिलती है। गद्य के उदाहरण तो वैदिक काल से ही मिलते हैं। यजुर्वेद में उस दौर के गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके बाद ब्राह्मण ग्रन्थ और उपनिषद् आदि गद्य में रचे गए। त्रिपाठीजी ने गद्य के कई रूप बताए हैं—वैदिक गद्य, शिलालेखीय गद्य, शास्त्रीय गद्य, वार्तालाप की शैली का संवादोपयोगी गद्य, काव्यात्मक गद्य आदि। ये सभी प्रकार विषयवस्तु की दृष्टि से तय किए गए हैं। शैली की दृष्टि से भी गद्य के उन्होंने चार प्रकार बताए हैं—मुक्तक, वृत्तगंधि, उत्कलिकाप्राय और चूर्णक।

कई पश्चिमी विद्वानों ने संस्कृत को एक कृत्रिम भाषा माना तथा यह मत प्रतिपादित किया कि संस्कृत काव्य की शैली कालिदासोत्तर काल में अधिकाधिक कृत्रिम और दुरूह होती गयी। किन्तु माघ और भारवि के पश्चात रचे गए महाकाव्यों, लघुकाव्यों और रूपकों का अनुशीलन कर त्रिपाठीजी ने इस धारणा को गलत साबित किया है। संस्कृत साहित्य समग्र भारतीयता का व्यापक और सजीव रूप प्रस्तुत करता रहा है। महाकवियों ने इसे आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक रूप में व्याख्यायित किया है। जीवन के इन तीन स्तरों का परिचय पुस्तक के प्रथम अध्याय में दिया गया है। त्रिपाठीजी ने लिखा है—''आधिभौतिक स्तर पर संस्कृत इस देश के भूगोल, इतिहास तथा भौतिक पर्यावरण की झाँकी देता है। आधिदैविक स्तर पर इस देश में मनीषियों और विचारकों ने जो चिंतन दिया, उसकी अभिव्यक्ति हमारे कवियों ने की।''

प्रस्तुत पुस्तक खोजी वृत्ति, नवीन सूचनाओं और समृद्ध प्रसंगों का वृत्तांत है। इसे एक जरूरी इतिहास कृति के रूप में देखा जाना चाहिए। **— प्रदीप तिवारी**

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास

लेखक : राधावल्लभ त्रिपाठी

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

मूल्य : 200 रुपये **'पुस्तक वार्ता'** से साभार

भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र

(संस्कृत तथा हिन्दी एम०ए० के लिए)

इसमें भाषाशास्त्रीय नवीनतम अनुसंधानों का समन्वय करते हुए भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र का प्रामाणिक एवं सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें भाषा, ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान, अर्थविज्ञान, विश्व की समस्त भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण, भारोपीय परिवार, भारतीय अर्थभाषाएँ, स्वनिम, पदिम, रूपिम, आर्थिक, स्वनिम-विज्ञान, भाषाशास्त्र का इतिहास एवं लिपि का इतिहास आदि विषयों का प्रामाणिक विवेचन हुआ है। पुस्तक सभी विश्वविद्यालयों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है। पृष्ठ संख्या 525

मूल्य : सजिल्द 200 रुपये अजिल्द 120 रुपये

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति

(संस्कृत एम०ए० एवं आचार्य आदि के लिए)

यह वैदिक साहित्य-विषयक प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें वैदिक साहित्य का सर्वांगीण विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही वेदकालीन संस्कृति का भी संक्षिप्त विवेचन किया गया है। यह ग्रन्थ 13 अध्यायों में विभक्त हुआ है। इसके मुख्य प्रतिपाद्य विषय हैं—वेदों का महत्त्व, वेदों का रचनाकाल, वेदों पर भारतीय और पाश्चात्त्य विद्वानों द्वारा किए गए कार्यों का विस्तृत विवरण, वैदिक संहिताओं का विस्तृत विवेचन, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ और उपनिषदों की विस्तृत समीक्षा, वेद के 6 अंगों अर्थात् शिक्षा ग्रन्थ, व्याकरण ग्रन्थ, छन्दों का परिचय, निरुक्त, ज्योतिष और कल्पसूत्रों का विस्तृत विवेचन। इसके अतिरिक्त वैदिक संस्कृति, तत्कालीन भूगोल एवं सामाजिक जीवन, वैदिक अर्थव्यवस्था और वैदिक राजनीति का विशद विवेचन किया गया है। वैदिक देवों का स्वरूप, वैदिक यज्ञ-मीमांसा, वैदिक व्याकरण और स्वर प्रक्रिया का भी इसमें समावेश है। ग्रन्थ के अन्त में वेदों में विज्ञान विषयक तथ्य, वेदों में काव्य-सौन्दर्य और ललित कलाओं का भी आलोचनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। परीक्षार्थियों और शोध छात्रों के लिए यह अत्यन्त उपादेय ग्रन्थ है।

पृष्ठ सं० 370 + 16 मूल्य : सजिल्द 250 रुपये

छात्र संस्करण 125 रुपये

प्रौढ़-रचनानुवाद कौमुदी

(एम०ए० और आचार्य के छात्रों के लिए)

यह वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की आदर्श पुस्तक है, यह संस्कृत के उच्चस्तरीय ज्ञान के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। इसमें मुहावरेदार संस्कृत लिखने का अभ्यास कराया गया है। इसमें 300 नियमों और 1500 चुने हुए शब्दों के द्वारा 60 अभ्यासों में समस्त संस्कृत व्याकरण की शिक्षा दी गई है। इसमें दैनिक प्रयोग के शब्दों का भी संकलन किया गया है। भोजन, अन्न-पान, प्रसाधन, मिष्टान्न, आभूषण, खेलकूद, फल-फूल आदि से संबद्ध सैकड़ों शब्दों का प्रयोग करना सिखाया गया है।

प्रत्येक अभ्यास में 25-30 मुहावरों का प्रयोग करना सिखाया गया है। उच्चस्तरीय संस्कृत के ज्ञान के लिए आवश्यक समस्त संस्कृत व्याकरण का इसमें समावेश किया गया है। इसमें 100 शब्दों के रूप और 100 धातुओं के सभी लकारों के रूप दिए गए हैं। अन्य 500 धातुओं के 10 लकारों के संक्षिप्त रूप दिए गए हैं। इसमें 74 संधि-नियम दिए गए हैं। 100 धातुओं के आदि प्रत्यय् लगाकर बनने वाले रूपों का चार्ट भी दिया गया है। पुस्तक में 24 अति महत्त्वपूर्ण 20 विषयों पर सरल संस्कृत में निबन्ध दिए गए हैं। विविध विषयों पर लगभग 2000 सुभाषित विषयानुसार दिए गए हैं। ग्रन्थ के अन्त में पारिभाषिक शब्दकोश और हिन्दी-संस्कृत शब्दकोश भी दिया गया है। इसके 11 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

पृष्ठ सं० 440 + 12 मूल्य : 80 रुपये

संस्कृत-निबन्ध-शतकम्

(एम०ए०, आई०ए०एस०, पी०सी०एस०, आचार्य आदि के लिए)

इसमें सरल एवं सुललित भाषा में उच्चस्तरीय परीक्षाओं के लिए उपयुक्त 100 विषयों पर संस्कृत में निबन्ध दिए गए हैं। इसमें प्रयत्न किया गया है कि परीक्षोपयोगी कोई भी महत्त्वपूर्ण विषय छूटने न पावे। इसमें वेद, वेदांग, गीता, रामायण, महाभारत और पुराणों से संबद्ध विषयों पर 10, दार्शनिक विषयों पर 6 काव्यशास्त्रीय विषयों रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति और शब्दशक्ति आदि पर 11, साहित्यिक विषयों कालिदास, माघ, बाण, दण्डी, भवभूति आदि पर 15, भाषाशास्त्रीय विषयों पर 5, सांस्कृतिक विषयों पर 9, सामाजिक विषयों पर 5, आर्थिक महत्त्व के विषयों पर 20 निबन्ध दिए गए हैं। पुस्तक सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है। पुस्तक के 9 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तक की 50 हजार से अधिक प्रतियों का बिना इसकी उपयोगिता और लोकप्रियता का सूचक है।

पृष्ठ सं० 324 मूल्य : 80 रुपये

संस्कृत व्याकरण एवं लघु-सिद्धान्त-कौमुदी

(एम०ए० संस्कृत, शास्त्री आदि के लिए)

संस्कृत भाषा के व्याकरण के ज्ञान के लिए यह सर्वोत्तम ग्रन्थ है। इसमें व्याकरण को अत्यन्त रोचक और सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें भूमिका में संस्कृत व्याकरणशास्त्र का विस्तृत इतिहास दिया गया है। इसमें सम्पूर्ण लघु-सिद्धान्तकौमुदी हिन्दी अनुवाद और विस्तृत व्याख्या के साथ दी गइ है। सिद्धान्तकौमुदी से कारक-प्रकरण विस्तृत व्याख्या के साथ दिया गया है। ग्रन्थ की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए इसमें संक्षिप्त वैदिक व्याकरण, स्वर-सम्बन्धी नियम, वैदिक छन्द-परिचय, संक्षिप्त प्राकृत व्याकरण और पारिभाषिक शब्दकोश भी दिया गया है। संस्कृत व्याकरण को सरल और वैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए यह आदर्श ग्रन्थ है।

सजिल्द : 250 रुपये

अजिल्द : 180 रुपये

भौगोलिक चिन्तन : उद्‌भव एवं विकास

डॉ० श्रीकान्त दीक्षित

छात्र संस्करण : 90 पुस्तकालय संस्करण : 150

भौगोलिक साहित्य का विकास पूर्णरूपेण तत्सम्बन्धी चिन्तन के उद्‌भव एवं विकास पर आधारित है। भौगोलिक संकल्पनाओं के ज्ञान के बिना भूगोल का सम्यक् अध्ययन सम्भव नहीं है। 'भौगोलिक चिन्तन : उद्‌भव एवं विकास' मुख्यत: हिन्दीभाषी क्षेत्र के विद्यार्थियों की आवश्यकता एवं पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर लिखी गयी है, जिसमें भौगोलिक चिन्तन जैसे गूढ़ विषय को सरल एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक की विषयवस्तु पूर्ण नियोजित 12 अध्यायों में विभक्त है जिसमें प्राचीन भारतीय भूगोल से लेकर आधुनिक काल की भौगोलिक-चिन्तन की प्रवृत्तियों को क्रमिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें यथास्थान मानचित्र एवं प्रमुख भूगोलवेत्ताओं के चित्र भी दिये गये हैं तथा विभिन्न उद्धरणों को मूल ग्रंथों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

सेविवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक संबंध

डॉ० जगदीश सरन माथुर

रीडर, वाणिज्य संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

'सेविवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक संबंध' भारतीय विश्वविद्यालयों के बी०काम० तथा एम०काम० पाठ्यक्रम को दृष्टिगत कर नवीनतम सामग्री के साथ प्रस्तुत की गई है। सेविवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक संबंध अथवा मानव संसाधन प्रबंध में विशिष्टता प्राप्त कर रहे या डिप्लोमा कर रहे विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। विषय को सुबोध बनाने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। विषय को सुबोध बनाने की दृष्टि से विद्वानों के उद्धरण हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी दिये गये हैं। पुस्तक की भाषा सरल, स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। पुस्तक के अन्त में लघु तथा विस्तृत उत्तर वाले प्रश्न भी दिये गये हैं। पुस्तक में लेखक के विगत 25 वर्षों के अध्यापन का अनुभव संचित है।

पुस्तक में सम्मिलित अध्याय

1. सेविवर्गीय प्रबंध—परिभाषा, उद्देश्य एवं महत्त्व, 2. सेविवर्गीय प्रबंध—क्षेत्र, सिद्धान्त, दर्शन व अन्य पहलू, 3. सेविवर्गीय प्रबंध के कार्य, उत्तरदायित्व एवं योग्यताएँ, 4. सेविवर्गीय नीतियाँ एवं पद्धतियाँ, 5. संगठन का परिचय, 6. संगठन-रचना, 7. जनशक्ति नियोजन, 8. कार्य-विश्लेषण, कार्य-विवरण एवं कार्य-विशिष्टता, 9. भर्ती, चयन एवं नियुक्ति, 10. प्रशिक्षण, 11. पदोन्नति, पदावनति, स्थानान्तरण, अवकाश ग्रहण तथा अन्य समान पहलू, 12. अधिशासी विकास कार्यक्रम, 13. निष्पादन मूल्यांकन, 14. कार्य मूल्यांकन, 15. मजदूरी एवं वेतन प्रशासन, 16. मजदूरी भुगतान की रीतियाँ तथा प्रेरणात्मक मजदूरी योजनाएँ, 17. लाभ भागिता एवं सहभागिता, 18. अनुषंगी लाभ, 19. मानवीय सम्बन्ध, 20. अभिप्रेरण, 21. सम्प्रेषण, 22. सेविवर्गीय पर्यवेक्षण, 23. नेतृत्व, 24. कार्य संतुष्टि, 25. कर्मचारी मनोबल, 26. अनुशासन, 27. सेविवर्गीय अभिलेख तथा उसका अनुरक्षण, 28. अंकेक्षण एवं शोध, 29. औद्योगिक संबंध एवं औद्योगिक संघर्ष, 30. परिवेदना, 31. सामूहिक सौदेबाजी तथा 32. प्रबंध में श्रमिकों की भागीदारी

एक सौ साठ रुपये

भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक चिंतन

(अर्थशास्त्र, राजनीति, सामाजिक जीवन तथा अन्य संदर्भों में भारतीय परम्परा और आधुनिक प्रासंगिकता)

कृष्णकुमार सोमानी

पचहत्तर रुपये

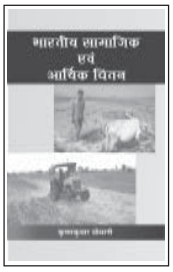

आज का भारतीय समाज पश्चिम और भारत की संस्कृतियों का अपमिश्रण है। इसे और ठीक तरीके से कहें तो आधुनिक अनाजों की भाँति यह वर्णसंकर बनकर रह गया है। हम पश्चिम का अंधानुकरण करने के एकदिश मार्ग पर चल पड़े हैं और यह मानसिक गुलामी हमारी सभी प्रकार की व्यवस्थाओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। भगवद्‌गीता में कहा गया है कि इस प्रकार की वर्णसंकर या दोगली नस्ल अपनी समस्त पारिवारिक और सामुदायिक संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट कर देती है। परिणामस्वरूप पीढ़ी दर पीढ़ी को नारकीय वातावरण में घुटना पड़ता है।

दुर्भाग्यपूर्ण तो यह है कि आज शिक्षित समाज की विचारधारा उन पाठ्य-पुस्तकों के आधार पर निर्मित हुई है जो स्वतंत्रता से पहले अंग्रेजों द्वारा तैयार की गई थी। बच्चों के अपरिपक्व मस्तिष्क में बार-बार यह तथ्य ठूँसा जाता है कि पश्चिम की प्रणाली ही एकमात्र वैज्ञानिक, तर्कसंगत और समतामूलक प्रणाली है और यह कि भारत का अतीत 'अंधकार युग' के जैसा था जहाँ अंधविश्वास थे, गरीबी थी, दकियानूसी परम्पराएँ थीं और विकास का स्तर भी भिन्न था।

इस रचना का उद्देश्य भारतीय परम्पराओं की पृष्ठभूमि में मौजूद दर्शन और इसकी उपलब्धियों को सही संदर्भों में सामने लाना है।

अपनी परम्पराओं को सहेज कर रखने और अपने ही मूल पर आधारित देश के हजारों-हजार वर्ष के समृद्ध भविष्य के लिए एक नई दिशा की स्थापना इस पुस्तक का मूल उद्देश्य है।

बिन्दु बिन्दु विचार

साहित्य के दो केन्द्र समझे जाने वाले इलाहाबाद व वाराणसी में साहित्यिक रिक्तता पैदा हो गयी है जिससे धीरे-धीरे ये केन्द्र सिकुड़कर दिल्ली में सिमटते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है, साहित्य जगत अर्थ व राजनीति प्रधान हो चला है।

— विष्णुकान्त शास्त्री

★ ★ ★

शक्ति और पद के दुरुपयोग से भ्रष्टाचार के चक्र का जन्म हुआ है जो पूरे देश में व्याप्त होकर खतरनाक स्तरों तक पहुँच चुका है।

— राष्ट्रपति के०आर० नारायणन्

★ ★ ★

इलाहाबाद में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पुस्तक मेले में **लक्ष्मीकान्त वर्मा** ने कहा—लेखकों, प्रकाशकों और सामाजिक संस्थाओं को शिक्षा-माफियों तथा नौकरशाहों के विरुद्ध लड़ाई छेड़नी चाहिए। भ्रष्ट नौकरशाहों तथा पुस्तक माफियों के विरुद्ध संघर्ष बिना लेखक दरिद्र बने रहेंगे और पुस्तकें दीमकों का भोजन बनेंगी।

★ ★ ★

हिन्दी को अंग्रेजी से कोई खतरा नहीं है, क्योंकि यह पूरे राष्ट्र को जोड़ने वाली भाषा है। दक्षिण में हिन्दी का विरोध सिर्फ राजनैतिक विरोध है। **— डॉ० परमानंद पांचाल**

★ ★ ★

यह आश्चर्यजनक है कि दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी भाषा होने के बावजूद हिन्दी देश के आन्तरिक जीवन में लगभग कोई भूमिका नहीं निभाती। भारत में अच्छी नौकरी और बेहतर जीवन प्राप्त करने के लिए छात्र-छात्राओं से विदेशी भाषा अंग्रेजी सीखने की उम्मीद की जाती है।

— निर्मल वर्मा

★ ★ ★

हिन्दी बोलने वाले लोगों की संख्या अंग्रेजी बोलने वाले लोगों की संख्या से काफी अधिक है।

भारत में भाषा के रूप में हिन्दी को सर्वोच्च स्थान मिलना चाहिए। देश के सिर्फ मुट्ठी भर लोग अंग्रेजी जानते और बोलते हैं। **— नामवर सिंह**

★ ★ ★

देश के लोगों का दिलोदिमाग, जीवनशैली, सोचने का तरीका एवं नजरिया, दर्शन, विचारधारा और जीवन का लक्ष्य बदल रहा है। भारत के लोग अब पश्चिमी सभ्यता के पिछलग्गू बन गये हैं। ये लोग अपनी मातृभाषा हिन्दी को क्यों पसन्द करेंगे। देश के लोग पश्चिमी सभ्यता के सामने अन्धे हो गये हैं, क्योंकि सत्ता में ऊँचे पदों पर बैठा आदमी अंग्रेजी बोलता है। **— गिरधर राठी**

लोक

सम्पादक : पीयूष दईया

'लोक' लोक जीवन के विविध सांस्कृतिक पक्षों को उजागर करता हुआ एक विशिष्ट ग्रन्थ है।

लोक-संस्कृति के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार ''कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैले हुए भू-भाग पर पनपता हुआ मानव समाज भारतीय लोक है। भारतीय लोक हमारे सुदीर्घ इतिहास का अमृत फल है। जो कुछ हमने सोचा, किया और सहा, उसका प्रकट रूप हमारा लोक-जीवन है। लोक राष्ट्र की अमूल्य निधि है। हमारे इतिहास में जो भी सुन्दर तेजस्वी तत्त्व है, वह लोक में कहीं न कहीं सुरक्षित है। हमारी दृष्टि अर्थशास्त्र, ज्ञान, साहित्य, कला के नाना रूप, भाषाएँ और शब्दों के भण्डार, जीवन के आनन्दमय पर्वोत्सव, नृत्य, संगीत, कथा वार्ताएँ, आचार-विचार सभी कुछ भारतीय लोक से ओत-प्रोत है।''

इस विशाल लोक को श्री पीयूष दईया ने 700 पृष्ठों के विशाल ग्रन्थ में समेटने का प्रयास किया है। भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर की स्वर्ण जयंती के अवसर पर प्रकाशित इस ग्रन्थ में लोक के संदर्भ में उसके वैचारिक, दार्शनिक तथा सर्जनात्मक पक्षों को लेकर लोक को समग्र रूप से देखने का प्रयास किया गया है।

मिथक, इतिहास, चित्रकला में लोक दृश्य, प्रतीक, कथाएँ : लिखित और मौखिक, मराठी संतों के कूटकाव्य तथा लोक-गीत, वैगा; संथाल, बाङ्गला तथा पंजाबी लोकगीत, आदिवासी संस्कृति, लोक और शास्त्र, पारम्परिक रंगमंच आदि विषय लोकजीवन के विविध पक्षों को पूर्णता से अभिव्यक्त करते हैं।

इस ग्रन्थ में क्लॉद् लेवी स्त्रॉस, आक्टेवियो पाज़, रायकृष्णदास, कमला देवी चट्टोपाध्याय, वेरियर एल्विन, कोमल कोठारी, गुलाम मोहम्मद शेख, हकुशाह, इंद्रदेव, पूरनचंद्र जोशी, अयप्पा पणिक्कर, मानस मजुमदार, हबीब तनवीर, अर्नेस अल्बर्ट, डॉ० जया परांजपे, राममूर्ति त्रिपाठी, रामचन्द्र तिवारी आदि विद्वानों के लेख हैं। कुछ लेख अन्य भाषाओं में जिनका अनुवाद किया गया है। लोक का वैविध्यपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करती यह पहली कृति है। एक प्रकार से यह लोक-जीवन का कोश है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक श्री पीयूष दईया ने भारतीय लोक कला मण्डल को सार्थकता प्रदान की है। साहित्य, इतिहास तथा समाजशास्त्र के अध्ययेताओं को यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिए।

लोक, प्रकाशक : भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर, राजस्थान (राज०) 313 001, मूल्य : 750 रुपये

पुरइन-पात

भोजपुरी साहित्य से एक चयन

सम्पादक

डॉ० अरुणेश नीरन व डॉ० चितरंजन मिश्र

दो सौ रुपये

सन्त जब गाने लगते हैं तब भाषा अपनी सरहदें तोड़ देती है। भाषा में दार्शनिक बोलता है, सन्त बोली में गाता है। दार्शनिक से सन्त महान होता है, क्योंकि तर्क के प्रभाव से दर्शन ऊपर की ओर बढ़ता है जबकि सन्तों की बानी लहर की तरह फैल कर ढाई आखर वाले प्रेम को अपने अँकवार में भर लेती है। इसलिए सारे दार्शनिक शहरों में हुए और सारे सन्त गाँवों में, वनों में। भोजपुरी में सन्त काव्य की महान परम्परा रही है। उत्तर भारत की सन्त-परम्परा भोजपुरी की परम्परा है।

भोजपुरी के लोक-काव्य की परम्परा अत्यन्त समृद्ध है। इसमें लोक-जीवन के उल्लास, उछाह, हूक, हुलास, संस्कृति, बोध, प्रेम, विरह, विद्रोह, यथार्थ, संघर्ष आदि की मार्मिक व्यंजना मिलती है।

गद्य विधाओं में कहानी-साहित्य भोजपुरी में अत्यन्त उन्नत और महत्त्वपूर्ण है।

विद्यानिवास मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, विवेकी राय, गणेशदत्त किरण, आनन्द सन्धिदूत, अशोक द्विवेदी की रम्य रचनाएँ; रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', चन्द्रभाल द्विवेदी और सरदार देविन्दर पाल सिंह के **यात्रा संस्मरण**; रामनाथ पाण्डेय, रामदेव शुक्ल और पाण्डेय कपिल के **उपन्यास**; माधुरी शुक्ल की कहानी और राहुल सांकृत्यायन, भिखारी ठाकुर के नाटकों ने भोजपुरी गद्य की परम्परा को समृद्ध किया है।

भोजपुरी की श्रेष्ठ गद्य-पद्य रचनाओं के एक प्रतिनिधि संकलन की आवश्यकता बहुत दिनों से महसूस की जा रही थी। यह संकलन उसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

भोजपुरी लोक साहित्य

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

चार सौ रुपय

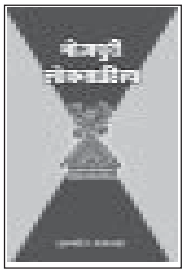

भोजपुरी भाषा, भोजपुरी लोकगीत, भोजपुरी लोकगाथा, भोजपुरी लोक-कथा तथा भोजपुरी प्रकीर्ण साहित्य पर शोधपरक ग्रन्थ।

भोजपुरी भाषा, भाषा का क्षेत्र, विस्तार, विभिन्न बोलियाँ, व्याकरण। विस्मृति के गर्भ में पड़े अनेक भोजपुरी रचनाकारों की कृतियों का अध्ययन और विस्तृत विवेचन। लोकगीतों की भारतीय परम्परा—वैदिक काल से लेकर अब तक। लोकगीतों का वर्गीकरण। भोजपुरी लोक-संस्कृति एवं प्रथाओं के चित्र। लोकगीतों में भारतीय संस्कृति का प्रवाह—भोजपुरी, मैथिली, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं में।

लोककथाओं की उत्पत्ति, प्रकार और विशेषताएँ। लोक-कथाओं की भारतीय परम्परा वैदिक आख्यानों से लेकर लोक-कथाओं का अविरल प्रवाह। लोक-कथाओं का वर्गीकरण, लोक-कथाओं की शैली।

प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत भोजपुरी लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियाँ और विविध प्रकार की सूक्तियाँ, सामाजिक प्रथाएँ।

लोकसाहित्य के सभी अंगों का विस्तृत अध्ययन तथा समीक्षा। भोजपुरी लोक साहित्य का ज्ञानकोश।

केन्द्रीय विद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तथा सार्वजनिक उपक्रम पुस्तकालयों को विविध विषयों की पुस्तकों के आपूर्तिकर्ता

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक पुलिस स्टेशन के बगल में

पो०बाक्स 1149, वाराणसी

फोन : (0542) 353741, 353082, 311423 ● फैक्स : (0542) 353082

ई-मेल : vvp@vsnl.com ● ई-मेल : vvp@ndb.vsnl.net.in

● हिन्दी साहित्य ● उपन्यास ● कहानी ● नाटक ● जीवनी ● संस्मरण ● रेखाचित्र ● कोश ● विश्वकोश ● विभिन्न लेखों के सम्पूर्ण साहित्य ● इतिहास ● भूगोल ● राजनीति ● समाजशास्त्र ● अर्थशास्त्र ● मनोविज्ञान ● शिक्षा ● गृह विज्ञान ● दर्शन ● कम्प्यूटर साइन्स ● अंग्रेजी साहित्य ● प्रतियोगी परीक्षा साहित्य ● पत्रकारिता ● पुस्तकालय विज्ञान ● विज्ञान ● भौतिक विज्ञान ● रसायन विज्ञान ● गणित ● प्राणि विज्ञान ● वनस्पति विज्ञान ● कृषि विज्ञान ● सैन्य विज्ञान ● कला ● महिलापयोगी आदि

सर्वोपयोगी पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विस्तृत शोरूम, पुस्तक चयन की सुविधा, डाक से आदेश प्राप्त होने पर यथाशीघ्र आपूर्ति की व्यवस्था।

प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु

डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल
प्रोफेसर
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सजिल्द : 900 **पेपरबैक : 600**

कला के विकास की भारतीय परम्परा का इतिहास अति प्राचीन है। ताम्रप्रस्तर-युगीन सैन्धव सभ्यता से लेकर ऐतिहासिक संस्कृति के कालक्रम में इस देश की कलाधारा अपने अजस्र प्रवहमान स्वरूप की साक्षी है। वैदिककालीन साहित्य में प्रतिबिम्बित कलात्मक विचारों तथा क्रिया-कलापों के लिए पुरातात्त्विक प्रमाणों का अभी अभाव है। तो भी, उसी परम्परा का आगामी प्रस्फुटन शैशुनाग-नन्द, मौर्य, शुंग, आन्ध्र-सातवाहन, शक-कुषाण, गुप्त आदि राजवंशों के युगों के भवन-निर्माणों, स्मारकों एवं कलाओं के बहुमुखी उन्नयन में देखा जाता है। इन सभी कालखण्डों के लिए प्राप्त सामग्री अत्यन्त विस्तृत तथा व्यापक है। प्रस्तर-शिल्प, मृन्मय शिल्प, धातु-शिल्प, चित्रकला, अलंकरण-आभूषण, मणि-शिल्प, दंत-शिल्प, काष्ठ-शिल्प आदि की विविध शैलियों के अध्ययन के लिए साक्ष्यों का न केवल साहित्यिक प्रत्युत पुरातात्त्विक संभार भी बहुमुखी और बहुमूल्य है। संस्कृति के विविध पक्षों में भौतिक स्तर पर हुई उपलब्धियों और तत्सम्बन्धी आदर्शों की समकालिक अभिव्यक्ति जानने-परखने के लिए कला अप्रतिम साधन है।

सौन्दर्य-शास्त्र एवं शिल्प-विधाओं की दृष्टि से भारतीय कला के क्रमिक विकास-चरणों का सविशेष अध्ययन अब अत्यन्त रोचक विशेषज्ञ-शास्त्र बन चुका। विद्यालयों एवं विश्व-विद्यालयों की उच्चस्तरीय शिक्षा-पद्धति में आज उसका पठन-पाठन सर्वत्र प्रचलित विषय है। हिन्दी माध्यम में इस विषय की समुचित पाठ्य-पुस्तकों का प्राय: अभाव-सा रहा है। उसी आवश्यकता की विशेष पूर्ति के लिए प्रस्तुत पुस्तक तैयार की गई है जिसमें विषय-वस्तु का सविस्तार एवं शास्त्रीय अध्ययन विद्वान् लेखक द्वारा किया गया है। प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु के सभी महत्त्वपूर्ण पक्षों का यहाँ ब्योरेवार लेखा-जोखा है। साथ में दिए गए साढ़े ग्यारह सौ रेखांकन तथा 24 फलकों में प्रस्तुत 65 छविचित्र उन-उन युगों की वस्तुत: प्रत्येक अपेक्षित वास्तु-रचना और शिल्पकृति से अध्येताओं तथा विद्यार्थियों का सीधे परिचय कराते हैं। इस प्रकार यह अपने विषय का न केवल विस्तार-पूर्वक विवेचन करने वाला स्रोत ग्रन्थ है प्रत्युत प्राचीन भारतीय कला-वस्तुओं का चित्रात्मक आकर-कोष है।

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क

डॉ० आर० गणेशन्
भारत कला भवन
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सजिल्द : 400 पेपरबैक : 250

आदिकाल से ही भारतीय जनमानस 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की अवधारणा से ओतप्रोत रहा है, जो भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। इसी अवधारणा से प्रेरित होकर पूर्वज संस्कार सम्पन्न अतिश्रेष्ठ मानवों ने अपनी सृजनात्मक क्षमता एवं कला-कौशल द्वारा संस्कृति के बहुआयामी पक्षों को समृद्ध किया है जिनके अवशेष स्वरूप वास्तविक मूर्त वस्तुयें आज भी जनसामान्य की प्रेरणा स्रोत बनकर विविध सांस्कृतिक आगारों, संग्रहालयों में संरक्षित हैं। इन संग्रहों के सारगर्भित ज्ञान से समुदाय को शिक्षित, जागरूक बनाने की दिशा में भारत में अब तक कोई सार्थक प्रयत्न नहीं हुआ है। यही कारण है कि भारत की बहुसंख्यक जनता इन सांस्कृतिक तत्त्वों का लाभ पाने में असमर्थ है।

आज की तकनीकी एवम् औद्योगिक विकास में हो रही तीव्रगामी प्रगति; जिसे आधुनिक विकास प्रक्रिया का अभिन्न अंग माना जा रहा है, के फलस्वरूप भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं का विखण्डन भी साथ ही साथ होना प्रारम्भ हो चुका है। आज हमारा समाज संस्कृति विहीन विकास की ओर उन्मुख होता जा रहा है। ऐसी दुरावस्था में देश के विविध संग्रहालय एवं सांस्कृतिक आगार ही कला एवं संस्कृति का सम्बन्ध लोक से करा सकेंगे। जीवन को उससे ओत-प्रोत कर सकेंगे। उन्नत परिदृश्य में यह दुरूह कार्य एक सुनियोजित प्रचार एवं जनसम्पर्कीय विधा द्वारा ही सम्भाव्य है। इसी दृष्टिकोण से डॉ० गणेशन् द्वारा लिखित भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क पुस्तक की अभिप्रायपूर्ण प्रासंगिकता है जिसमें विविध स्रोतों से प्राप्त एकत्रित सामग्रियों, प्रमाणों का सूक्ष्मता से विश्लेषण कर दिया गया यथोचित निर्देश, प्रस्ताव एवं सुझाव है जो इनके व्यक्तिगत अनुसन्धान का परिणाम है।

विगत कई वर्षों से एक ऐसी पुस्तक की नितान्त आवश्यकता अनुभव की जा रही थी जो भारतीय समाज के सर्वांगीण विकास के अनुरूप संग्रहालयों की नीति एवं कार्यक्रमों में परिवर्तन कर कुशलता से व्याख्या करने एवम् उनकी उपयोगिता का प्रतिपादन करने में उपयोगी हो सके। प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन इसी आशा और विश्वास के साथ लेखक ने किया है जो लम्बे समय तक भारतीय संग्रहालयविदों, संग्रहालय शुभेच्छुओं को, उत्पन्न नयी चुनौतियों का सामना करने हेतु समयोचित मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्ध होंगे।

प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति

प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर

सजिल्द : 250 **पेपरबैक : 125**

वैदिक, बौद्ध और जैन वाङ्मय, राजतरंगिणी के समान प्राचीन इतिहास, मेगेस्थनीस, युआनच्वांग सदृश विदेशी इतिहासकार तथा यात्रियों के वृत्तांत, प्राचीन शिलालेखों, दानपत्रों आदि साधनों से प्रत्यक्ष ऐतिहासिक व सत्य से अधिक संबद्ध जो सामग्री प्राप्त होती है, उनका भी सहारा लेकर प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति के साधार, सांगोपांग किन्तु अनतिविस्तृत विवेचन करने का प्रयास इस ग्रन्थ में किया गया है।

प्राचीन भारतीय इतिहास वैदिक, उपनिषद् मौर्य, गुप्त आदि काल खंडों में विभाजित है। विवेचित संस्थाओं और शासनतत्त्वों का विकास ऊपर निर्दिष्ट काल-खण्डों में किस प्रकार हुआ यह दिखाने का प्रयत्न प्रत्येक अध्याय में किया गया है। विभिन्न प्रान्तों में शासन-संस्थाओं का विकास कभी-कभी किस कारण भिन्न प्रकार से हुआ इसे भी बतलाने का, जहाँ संभव था, प्रयत्न किया गया है।

प्राचीन भारतीय इतिहास तथा राजनीति के अध्येताओं के लिए मानक ग्रन्थ।

प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक

डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव

दो सौ रुपये

आदिकाल से ही मानव ने समय-समय पर अपने को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतीकों का सहारा लिया है। आदिमानव भी अपनी गतिविधियों की अभिव्यक्ति प्रतीकों के माध्यम से करता था जिसके प्रमाण कंदराओं के भित्ति चित्रों में उपलब्ध हैं।

प्राचीन भारतीय कला धर्म से अनुप्राणित हैं अत: धर्म की पृष्ठभूमि में कतिपय प्रतीकों की गवेषणात्मक विवेचना प्राचीन काल के कुछ प्रमुख प्रतीकों जैसे लक्ष्मी, पूर्ण कलश, स्वस्तिक, कमल एवं गंगा-यमुना का समावेश इस पुस्तक में है; जिनके सामाजिक महत्व, उपयोगिता, सांस्कृतिक एकता, गतिशीलता एवं विकास के रूपांतर हम प्रतीकों के माध्यम से शिलालेखों पर उत्कीर्ण पाते हैं।

कलश की स्थापना, स्वस्तिक, यंत्र की संरचना आदि के पश्चात देवताओं का आवाहन, समस्त परिवारजनों, ग्रामवासियों को आमंत्रण आदि सांस्कृतिक एवं सामाजिक एकता को दर्शाता है। इतिहास की नींव पर ही वर्तमान के भव्य भवन का निर्माण सम्भव है। बिना सुसंस्कृत आधार के उज्जवल भविष्य की कामना असंभव है।

आज के विज्ञान युग में इन प्रतीकों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन, निश्चित रूप से आनेवाली पीढ़ी को दिशा देगा और अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करेगा-ऐसी अपेक्षा है। यह पुस्तक प्राचीन इतिहास एवं कला के जिज्ञासुओं के लिये भी उपयोगी है।

राष्ट्रप्रेम के गीत

सम्पादक : **कृपाशंकर शुक्ल**

सजिल्द : 150 **पेपरबैक : 100**

'राष्ट्रप्रेम के गीत' सुकवि श्री कृपाशंकर शुक्ल द्वारा सम्पादित राष्ट्रीय कविताओं का एक प्रतिनिधि एवं उत्कृष्ट संग्रह है। संग्रह का उद्देश्य आज की शिक्षित जनता के बीच क्रमश: बढ़ती हुई क्षेत्रीयता, जातीयता एवं स्वार्थपरता तथा उभरती हुई संकीर्ण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति को परिष्कृत करके उसमें राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को पुन: जागृत करना है। सम्पादक ने अपनी तत्परता, संवेदनशीलता, निष्ठा और श्रमशीलता का परिचय देते हुए संग्रह को प्रेरक, उद्बोधक और समृद्ध बनाने का प्रयत्न किया है। संग्रह में बहुत से नये कवियों को सम्मिलित करके उसने अपनी गौरवमयी पारम्परिक राष्ट्रीय भावधारा के नैरन्तर्य को बनाए रखने की सार्थक चेष्टा की है। संग्रह में सम्पादक श्री कृपाशंकर शुक्ल की भी पाँच कविताएँ संगृहीत हैं। इन कविताओं को देश की वर्तमान दुर्दशा का दर्पण कहा जा सकता है। इस दुर्दशा को दूर करने के लिए जिन कवि द्वारा 'बापू' का आह्वान उस गहरी पीड़ा की ओर संकेत करता है जिससे व्यथित और मथित होकर कवि ने इस संग्रह को प्रकाशित करने का संकल्प किया है।

बोलने की कला

डॉ० भानुशंकर मेहता

दो सौ रुपये

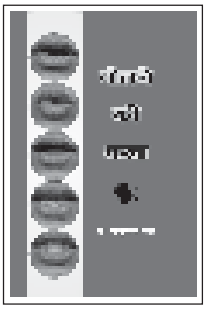

रंगमंच पर अभिनय करने, सभा सोसायटी का राजनीतिक मंच पर भाषण करने, कक्षा में छात्रों को पढ़ाने के लिए ठीक से अपने आपको अभिव्यक्त करने के लिए बोलने की कला जानना अत्यावश्यक है। सामान्य जीवन से भी शिष्ट व्यवहार और मधुर बातचीत के लिये भी यह कला उपयोगी सिद्ध होगी। अभिनय, भाषण या बातचीत स्मृति और बुद्धि के सहारे चलते हैं तो बहुधा आपको आलेख या निबन्ध, मंच या रेडिया पर पढ़ना भी होता है, वहाँ भी बोलने की कला काम आती है।

बोलने की कला शुद्ध डच्चारण या सही व्याकरण सम्मत भाषा मात्र नहीं है उसमें उतार-चढ़ाव, बल, भावाभिव्यंजना, काकु प्रयोग, विश्राम के साथ खड़े होने का कायदा, हाथ और मुख की मुद्रा का रहस्य भी जानना होता है।

बोलने की कला सीखकर व्यक्ति कुशल अभिनेता या भाषणकर्त्ता ही नहीं, उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायुष्य की कुंजी भी प्राप्त कर लेता है।

यह लघु पुस्तक वाक्सिद्धि का अमोघ मंत्र प्रदान करती है।

सृष्टि और उसका प्रयोजन

मेहेर बाबा के 'गॉड स्पीक्स' पर आधारित

प्रस्तुतकर्ता : **शिवेन्द्र सहाय**

पैंसठ रुपये

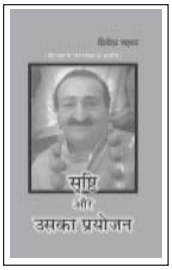

'गॉड स्पीक्स' के अनुसार सृष्टि के अन्तर्गत आत्मा की चेतना का विकास वस्तुत: अचेतन ब्रह्म की चेतन परमात्मा की ओर यात्रा है। ईश्वर जो अनादि तथा अखण्ड है, अनेक स्वरूपों में विभिन्न प्रकार के अनुभव करता हुआ, स्वयं अपने ही द्वारा निर्धारित बंधनों को पार करते हुए अन्तत: मानवस्वरूप के पुनर्जन्म व अन्तर्मुखी यात्रा के द्वारा आत्म-चेतना प्राप्त करता है।

शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम

प्रो० राजेश्वर उपाध्याय व डॉ० सरला पाण्डेय

छात्र संस्करण : 80

पुस्तकालय संस्करण : 150

शिक्षा में तकनीकी शिक्षा के दो महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं जिनके एकीकरण से शिक्षक अपनी कार्य-प्रणाली को और सशक्त बनाकर स्वयं एवं छात्रों के विकास में सहयोग प्रदान कर सकता है।

इस दृष्टि से इस पुस्तक में विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्रियों यथा फिल्म, दूरदर्शन, कम्प्यूटर के प्रयोग एवं विभिन्न विधियों—अभिक्रमित अधिगम, अनुरूपण, क्रीड़न, दल शिक्षण, क्रियात्मक अनुसंधान तथा सम्प्रेषण की प्रभाविता, शिक्षण के प्रतिमान एवं फ्लैन्डर्स की अन्त:क्रिया विश्लेषण पद्धति का वर्णन प्रस्तुत किया गया है, जो शिक्षक-प्रशिक्षक संस्थाओं एवं भावी शिक्षकों के साथ-साथ कार्यरत शिक्षकों के लिए अपनी शिक्षण-प्रक्रिया में आशोधन एवं परिवर्धन लाने के लिए उपयोगी साबित होगी, ऐसा प्रयास लेखकद्वय ने किया है।

अलंकार-समुच्चय

लेखक : राम रघुबीर

प्रकाशक: मीनाक्षी प्रकाशन

डी-62, गली नं० 3, लक्ष्मीनगर, नई दिल्ली-110 092

दो सौ रुपये

इस ग्रन्थ में अलंकारों के समुचित लक्षणों और स्वरूप निर्धारण के साथ उसके उद्भव और विकास का भी उल्लेख किया गया है तथा हिन्दी काव्य में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर कतिपय अलंकारों के लक्षण और स्वरूप निर्धारण में आवश्यक संशोधन-परिवर्धन किया गया है। अलंकारों के उदाहरण हिन्दी काव्य से ही नहीं अपितु उर्दू-काव्य से भी किया गया है। अलंकार शास्त्र पर विविध उद्धरणों से संकलित अध्ययनपूर्ण रोचक ग्रन्थ।

कृष्नायन

रामबदन राय

दो सौ रुपये

राम त्रेता युग के अवतारी पुरुष हैं और कृष्ण द्वापर युग के। एक धनुषधारी हैं दूसरे वंशी वादक। राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, कृष्ण चक्रधारी हैं और लीला पुरुषोत्तम। लोक-जीवन में राम अधिक लोकप्रिय हैं। गाँवों में कृष्ण जन्म का समारोह आयोजित होता है, उसमें भी रामजन्म के पद गाये जाते हैं क्योंकि तुलसीदास का रामचरितमानस घर-घर में पूजित और वाचित होता है, जबकि कृष्ण लीला का ग्रन्थ श्रीमद्भागवत संस्कृत में होने से लोक-जीवन में स्थान नहीं बना पाता।

'कृष्नायन' के रचयिता श्री रामबदन राय ने इस अभाव की पूर्ति करने का प्रयास किया है और रामचरितमानस की शैली में सरल, सरस और सुबोध भाषा में कृष्णचरित का वर्णन किया है। यह उनकी निष्ठा और रचना शक्ति का द्योतक है।

रचयिता ने युगबोध के सन्दर्भ में सर्वधर्म समभाव का प्रयास किया है। निम्न पंक्तियाँ इसके प्रमाण हैं—

हरि जनमे जिनि धाम, कपिलवस्तु जैरूसलम।
प्रभृति करउं प्रनाम, सबहिं मान मथुरामय॥
तुम हो समदरसी, सबहिं हितैषी,
सरबतरी अतरी-ततरी।
जस बाभन गाई, बनिज भाई,
तसहिं तोहि मुदरी छतरी॥
परिहरि पृथ्वी गजनवी, आयुध नाना नाम।
आओ जग को जीत लें, छेड़ मुरलिया स्याम॥

आशा है कृष्नायन का स्वागत होगा।

पूर्वांचल के संत-महात्मा

प्रस्तुतकर्ता : **परागकुमार मोदी**

साठ रुपये

भारत संत और संतों की महिमा की भूमि है। अनन्तकाल से यह परम्परा चलती चली आ रही है। हमारा सत्साहित्य इससे भरा- पूरा है। जब-जब भारतभूमि पर संकट आया है तब-तब संत-महात्माओं ने अपनी संकल्प-शक्ति से इसके निवारण का सघन प्रयास किया है।

इसी भाव-भूमि पर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के उन संत-महात्माओं का परिचय दिया गया है जिन्होंने लोकमानस को उद्बुद्ध किया है।

प्रकाशक

मानस ग्रंथागार

रमापुरी कालोनी, संकटमोचन, वाराणसी-5

प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा कला
प्रमुख पाठ्य ग्रन्थ

	सजिल्द	अजिल्द
प्रो० अनन्त सदाशिव अलतेकर		
प्राचीन भारतीय शासन पद्धति	250.00	125.00
डॉ० लल्लनजी गोपाल		
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा	150.00	
प्रो० ए०के० नारायण		
ग्रीक भारतीय (अथवा यवन)	300.00	
डॉ० राजबली पाण्डेय		
प्राचीन भारत	300.00	150.00
डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त		
Imperial Guptas, Vol. I & II (Each)	200.00	
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख खण्ड-1, मौर्यकाल से कुषाण (गुप्त पूर्व) काल तक	150.00	100.00
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख खण्ड-2, (गुप्तकाल 319-543 ई०)	120.00	80.00
भारत के पूर्वकालिक सिक्के	275.00	150.00
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ	60.00	40.00
हमारे देश के सिक्के		15.00
डॉ० ओंकारनाथ सिंह		
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ (600 ई० से 1200 ई० तक)	100.00	70.00
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल		
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा	250.00	120.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु	900.00	600.00
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु		200.00
डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी तथा डॉ० कमल गिरि		
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला	150.00	100.00
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण (7वीं शती से 13वीं शती)	325.00	
डॉ० ब्रजभूषण श्रीवास्तव		
प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला	200.00	120.00
डॉ० आर० गणेशन		
भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क	400.00	250.00
डॉ० झारखण्डे चौबे		
इतिहास दर्शन	300.00	150.00
डॉ० हीरालाल गुप्त		
प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार		30.00
डॉ० ठाकुरप्रसाद वर्मा		
पुराभिलेख चयनिका		50.00
सच्चिदानंद त्रिपाठी		
शुंगकालीन भारत		50.00

	सजिल्द	अजिल्द
डॉ० रेणुका कुमारी		
चालुक्य और उनकी शासन व्यवस्था	60.00	
डॉ० शीला सिंह		
बुद्ध और बोधिवृक्ष	150.00	
डॉ० महेशकुमार शरण		
कम्बुज देश का राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास	175.00	
DR. PARIPURNA NAND VERMA		
Ancient Indian Administration & Penology	300.00	
DR. KIRAN SINGH		
Textiles in Ancient India	200.00	
DR. ASHA KUMARI		
Hinduism and Buddhism	200.00	
DR. M. P. SINGH		
Life in Ancient India	100.00	
DR. J. S. MISHRA		
Albiruni : An Eleventh Century Historian	60.00	
डॉ० श्रीराम गोयल		
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ	250.00	120.00
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ		50.00
डॉ० शैलेन्द्रप्रसाद पांथरी		
दक्षिण-पूर्व एशिया		30.00
डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव		
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक	200.00	
डॉ० मोहन गुप्त		
महाभारत का काल निर्णय (ज्योर्तिवैज्ञानिक साक्ष्य के आधार पर)	200.00	
डॉ० गणेशप्रसाद बर्नवाल		
दिल्ली सल्तनत (तराइन से पानीपत)	80.00	50.00
दिल्ली के सुलतानों की धार्मिक नीति (1206-1526 ई०)	80.00	

काशी का इतिहास

डॉ० मोतीचन्द्र		
काशी का इतिहास	500.00	
पं० बलदेव उपाध्याय		
काशी की पाण्डित्य परम्परा	600.00	
डॉ० हरिशंकर		
काशी के घाट : कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन	300.00	
डॉ० सरितकिशोरी श्रीवास्तव		
वाराणसी के स्थाननामों का सांस्कृतिक अध्ययन	250.00	

हिन्दी साहित्य
साहित्यशास्त्र तथा समीक्षा

	सजिल्द	अजिल्द
डॉ० भगीरथ मिश्र		
काव्यशास्त्र	180.00	80.00
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास सिद्धान्त और वाद	150.00	70.00
नया काव्यशास्त्र	80.00	
काव्यरस : चिन्तन और आस्वाद	50.00	
अर्चना श्रीवास्तव		
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र		70.00
डॉ० रामचन्द्र तिवारी		
आलोचक का दायित्व		80.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	70.00	40.00
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश		50.00
त्रिवेणी : रामचन्द्र शुक्ल (सम्पादन तथा समीक्षा)		25.00
चिन्तामणि : रामचन्द्र शुक्ल (सम्पादन तथा समीक्षा)		40.00
हिन्दी का गद्य साहित्य	500.00	300.00
डॉ० रामकली सराफ		
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ		150.00
डॉ० शुकदेव सिंह		
संत कबीर और भगताही पंथ		130.00
डॉ० सदानन्दप्रसाद गुप्त		
हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य	160.00	
पूर्णिमा सत्यदेव		
भारतेन्दु के नाट्य शब्द	100.00	
डॉ० माधवेन्द्रप्रसाद पाण्डेय		
सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत	250.00	
सं० डॉ० सर्वजीत राय		
टूटते हुए गाँव का दस्तावेज (लोकऋण : बनगंगी मुक्त है)		40.00
सं० डॉ० अनिलकुमार 'आंजनेय'		
सृजन यज्ञ जारी है (विवेका राय : साहित्य समीक्षा)		100.00
सं० डॉ० रतनकुमार पाण्डेय		
साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति	150.00	
नागार्जुन की काव्य-यात्रा		25.00
डॉ० लालसाहब सिंह		
हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास		50.00
जगन्नाथदास 'रत्नाकर'		
कविवर बिहारी		40.00
डॉ० बच्चन सिंह		
क्रान्तिकारी कवि निराला		80.00
डॉ० रागिनी वर्मा		
फणीश्वरनाथ रेणु और उनका कथा साहित्य	320.00	

	सजिल्द	अजिल्द
डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ		
अक्षर बीज की हरियाली	180.00	
डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी		
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा	80.00	
डॉ० मञ्जु त्रिपाठी		
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य संसार	100.00	

तुलसी साहित्य समीक्षा

डॉ० रामचन्द्र तिवारी		
कथा राम कै गूढ़	125.00	
डॉ० युगेश्वर		
मानस-मीमांसा	250.00	150.00
डॉ० मीनाकुमारी गुप्त		
हिन्दी काव्य में हनुमत् चरित्र	400.00	
डॉ० रामअवतार पाण्डेय		
तुलसीकृत विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन	320.00	
डॉ० भगवानदेव पाण्डेय		
मानस सूक्ति सुधा	80.00	
डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० अनिलकुमारी तिवारी		
मध्यकालीन अवधी का विकास	160.00	

कबीर-साहित्य

डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह		
कबीर वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित)		
प्रथम खण्ड : रमैनी	80.00	50.00
द्वितीय खण्ड : सबद	250.00	150.00
तृतीय खण्ड : साखी	250.00	140.00
कबीर वाणी पीयूष		45.00
कबीर-साखी-सुधा		10.00
डॉ० वासुदेव सिंह		
कबीर काव्य कोश	150.00	
हिन्दी सन्तकाव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन	320.00	
डॉ० रामनाथ घूरेलाल शर्मा		
कबीर और अखा : तुलनात्मक अध्ययन	80.00	
डॉ० रामचन्द्र तिवारी		
कबीर और भारतीय संत साहित्य	180.00	100.00

लोक साहित्य

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय		
भोजपुरी लोकसाहित्य	400.00	
डॉ० हीरालाल तिवारी		
गंगाघाटी के गीत	100.00	
डॉ० शान्ति जैन		
लोकगीतों के संदर्भ और आयाम	700.00	
सं० श्री नारायणदास		
बदमाश दर्पण (तेग़ अली)		60.00
सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन'		
डॉ० चितरंजन मिश्र		
पुरइन-पात (पाठ्य ग्रन्थ)		60.00
पुरइन-पात (भोजपुरी साहित्य संचयन)	200.00	

भाषाशास्त्र

DR. SHRUTI PANDEY		
A Comparative Study of Bhojpuri & Bengali	200.00	
DR. VED PRAKASH VATUK		
Study of Modern Japanese		25.00
DR. M.V. SUBBURAMAN		
Hindi Translation & Comprehension Handbook		10.00
रघुनन्दनप्रसाद शर्मा		
प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार	150.00	
डॉ० विजयपाल सिंह		
कार्यालयीय हिन्दी	80.00	50.00
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना		65.00
डॉ० कन्हैया सिंह		
हिन्दी भाषा, साहित्य और नागरी लिपि		40.00
काव्यांग कौमुदी		16.00
डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० अनिलकुमार तिवारी		
मध्यकालीन अवधी का विकास	160.00	
डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री		
भाषाशास्त्र तथा हिन्दी भाषा की रूपरेखा	50.00	
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी		
अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन	400.00	
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र	250.00	120.00
डॉ० भोलाशंकर व्यास		
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन	100.00	60.00
इन्द्रदेवप्रसाद आर्य		
भाषा-विज्ञान : सश्लिष्ट प्रश्नात्मक विवेचन		10.00
डॉ० बदरीनाथ कपूर		
लिपि, वर्तनी और भाषा	30.00	20.00
हिन्दी व्याकरण की सरल पद्धति		25.00
नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश	200.00	
सिद्धार्थ पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश (छात्रोपयोगी)	40.00	25.00
डॉ० के०एम० चन्द्रमोहन		
हिन्दी वातायन		20.00
जयशङ्कर प्रसाद		
ध्रुवस्वामिनी (नाटक)		9.00
ध्रुवस्वामिनी (मूलनाटक तथा समीक्षा)		20.00
चन्द्रगुप्त (नाटक)		25.00
स्कन्दगुप्त (नाटक)		20.00
अजातशत्रु (नाटक)		16.00
प्रसाद तथा आँसू (मूल)		8.00
कामायनी		20.00
लहर		15.00
डॉ० किशोरीलाल गुप्त		
प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ		50.00
पुरुषोत्तमदास मोदी		
अंतरंग संस्मरणों में जयशङ्कर प्रसाद		150.00
डॉ० विनयमोहन शर्मा		
प्रसाद तथा आँसू (मूल, टीका, समीक्षा)		20.00
प्रेमचंद		
कर्मभूमि		40.00
निर्मला		25.00
संक्षिप्त गबन		30.00
गबन सम्पूर्ण	125.00	45.00
गोदान (भूमिका : डॉ० कुमार पंकज)	150.00	60.00

काव्य-संकलन (सम्पादित)

काव्य भारती (श्रेष्ठ हिन्दी कविताओं का संकलन)	*अनुरागकुमार*	10
आधुनिक काव्य विविध	*डॉ० शम्भूनाथ त्रिपाठी*	25
अज्ञेय और मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविताएँ	*डॉ० शम्भूनाथ त्रिपाठी*	30
आधुनिक काव्यधारा	*डॉ० विजयपाल सिंह*	30
छायावाद के प्रतिनिधि कवि	*डॉ० विजयपाल सिंह*	25
काव्य-सौरभ	*सं० पुरुषोत्तमदास मोदी*	25
पद्य परिमल	*सं० पुरुषोत्तमदास मोदी*	300
आदिकालीन काव्य	*डॉ० वासुदेव सिंह*	25
दिशान्तर	*डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव तथा डॉ० विश्वनाथप्रसाद तिवारी*	20
अस्मिता	*डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ० जितेन्द्रनाथ पाठक*	32
अभिव्यक्ति	*डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव*	15
मध्यकालीन काव्य-संग्रह	*केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा*	40
आधुनिक काव्य-संग्रह	*''*	100
रीति काव्यधारा	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी तथा डॉ० रामफेर त्रिपाठी*	50
पद्मावत (संक्षिप्त)	*डॉ० सच्चिदानन्द राय व डॉ० मान्धाता राय*	36
संक्षिप्त रामचन्द्रिका	*सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	20
सूर-सञ्चयन	*उर्मिला मोदी*	30
कबीर वाणी पीयूष	*डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*	45
कबीर-साखी-सुधा	*डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*	10

रीति-रस *डॉ० शुकदेव सिंह* 15

काव्य-ग्रन्थ

धूमिल की कविताएँ *सं० डॉ० शुकदेव सिंह* 60
जौहर *श्यामनारायण पाण्डेय* 50
प्रसाद तथा 'आँसू' (मूल, टीका तथा समीक्षा) *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 20
आँसू (कविता) *जयशंकर प्रसाद* 8
कामायनी (काव्य) *जयशंकर प्रसाद* 20
लहर *जयशंकर प्रसाद* 15
वेलि क्रिसन रुकमणी री *सं० डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित* 80
कीर्तिलता और विद्यापति का युग *डॉ० अवधेश प्रधान* 40

कहानी-संग्रह

कहानियाँ (कई कहानियाँ) *डॉ० शुकदेव सिंह* 30
आधुनिक कहानियाँ *डॉ० सुरेन्द्र प्रताप* 25
प्रतिनिधि कहानियाँ *डॉ० बच्चन सिंह* 45
आधुनिक कहानी-संग्रह *केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा* 40
कृती कथाएँ *डॉ० शुकदेव सिंह तथा डॉ० विजयबहादुर सिंह* 25

उपन्यास

तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 60
मंगला *अनन्त गोपाल शेवड़े* 30
बनगंगी मुक्त है *डॉ० विवेकी राय* 25
लोक-ऋण *डॉ० विवेकी राय* 80
कर्मभूमि *प्रेमचंद* 60
निर्मला *प्रेमचंद* 25
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 30
गबन (सम्पूर्ण) *प्रेमचंद* 45
गोदान *प्रेमचंद* 75

नाटक

गंगाद्वार *लक्ष्मीनारायण मिश्र* 25
छोटे नाटक *डॉ० शुकदेव सिंह* 22
ध्रुवस्वामिनी (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 9
ध्रुवस्वामिनी (मूल नाटक तथा समीक्षा) *डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव* 20
चन्द्रगुप्त (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 25
स्कन्दगुप्त (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 20
अजातशत्रु (नाटक) *जयशंकर प्रसाद* 16
भास्करवर्मण *हीरालाल तिवारी* 10
भारत-दुर्दशा (भारतेन्दु) *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 10
श्री चन्द्रावली नाटिका *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 16
अँधेर नगरी *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 12
शताब्दी पुरुष *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 40
देवयानी (पौराणिक नाटक) *डॉ० एम० चन्द्रशेखरन् नायर* 20

संस्मरण, रेखाचित्र

हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र *चौथीराम यादव* 20
संस्मरण और रेखाचित्र *उर्मिला मोदी* 20
रेखाएँ और रेखाएँ *सुधाकर पाण्डेय* 25

संस्कृत-भाषा तथा साहित्य

संस्कृत व्याकरण तथा रचना

	सजिल्द	अजिल्द
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी		
संस्कृत-शिक्षा (भाग-1)		12.00
संस्कृत-शिक्षा (भाग-2)		12.00
संस्कृत शिक्षा (भाग-3)		15.00
प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी		18.00
रचनानुवाद कौमुदी		45.00
प्रौढ़-रचनानुवाद कौमुदी		90.00
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण)	250.00	150.00
संस्कृत-निबन्ध-शतकम्		80.00
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र	250.00	120.00
अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन	400.00	
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति	250.00	125.00
डॉ० रामअवध पाण्डेय व डॉ० रविनाथ मिश्र		
लघुसिद्धान्तकौमुदी		40.00
ज्योतिस्वरूप मिश्र		
बालसिद्धान्तकौमुदी		50.00
ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी		
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरणम्)		20.00

रस, अलङ्कार, साहित्यशास्त्र तथा समीक्षा

पण्डितराज जगन्नाथ		
भामिनी विलास का प्रस्ताविक-अन्योक्तिविलास (सटीक)		40.00
डॉ० जनार्दन गङ्गाधर रटाटे		
अलङ्कार-दर्पण (साहित्य-दर्पण दशम् परिच्छेद एवं छन्दोमञ्जरी)		15.00
विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी		
चन्द्रालोक-सुधा एवं छन्दोमञ्जरी-सुधा		25.00
डॉ० दशरथ द्विवेदी		
अभिनव रस सिद्धान्त		40.00
चन्द्रालोक (1 से 4 मयूख)		40.00
वक्रोक्तिजीवितम्		80.00
रसाभिव्यक्ति	150.00	
डॉ० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल		
ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित)		50.00
नगीनदास पारेख		
अभिनव का रस-विवेचन		100.00
डॉ० शालग्राम द्विवेदी		
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीति अध्ययन		100.00
डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी		
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास	350.00	200.00

	सजिल्द	अजिल्द
उर्मिला मोदी		
संस्कृत साहित्य की कहानी		50.00
डॉ० शिवशंकर गुप्त		
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय		80.00

भाषाशास्त्र

डॉ० भोलाशंकर व्यास		
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन	100.00	60.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी		
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र	250.00	120.00

वैदिक-साहित्य

स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती		
वेद व विज्ञान		180.00
विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी		
वेदचयनम्		60.00
डॉ० हरिदत्त शास्त्री		
ऋङ्मणिमाला		45.00
ऋग्वेदभाष्यभूमिका		40.00
डॉ० कपिलदेव द्विवेदी		
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति	250.00	125.00

पालि-प्राकृत-अपभ्रंश

डॉ० रामअवध पाण्डेय तथा डॉ० रविनाथ मिश्र		
पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह		80.00
पालि-संग्रह		20.00
डॉ० कोमलचन्द्र जैन		
पालि-साहित्य का इतिहास	25.00	15.00

संस्कृत-साहित्य (मूल ग्रंथ, समीक्षा सहित)

डॉ० देवर्षि सनाढ्य	
भर्तृहरिकृत नीतिशतकम्	10.00
रघुवंश-महाकाव्यम् (द्वितीय सर्गः)	4.00
डॉ० के० पी० सिन्हा	
शांकरवेदान्ते तत्व-मीमांसा	40.00
सं० डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी	
मुद्राराक्षसम्	100.00
मेघदूतम् (कालिदास)	50.00
दशरूपकम्	150.00
डॉ० जनार्दन गंगाधर रटाटे	
शिशुपालवधम् (प्रथम सर्गः)	16.00
शिशुपालवधम् (चतुर्थ सर्गः)	8.00
भारवि	
किरातार्जुनीयम (प्रथम सर्गः)	15.00
डॉ० विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी	
कादम्बरी : कथामुखम्	40.00
डॉ० रामअवध पाण्डेय	
उत्तररामचरितम्	100.00

सजिल्द अजिल्द

डॉ० दशरथ द्विवेदी

किरातार्जुनीयम (चतुर्थ सर्ग:) 10.00

डॉ० रविनाथ मिश्र

कठोपनिषद (प्रथम अध्याय) 15.00

सं० डॉ० शिवशंकर गुप्त

अभिज्ञानशाकुन्तलम् 80.00

श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 2-3) (तत्त्वबोधिनी टीका) 20.00

मनुस्मृति (द्वितीय अध्याय) 'तत्त्वबोधिनी' 40.00

वाल्मीकि : सुन्दरकाण्डम् - पञ्चम: सर्ग 10.00

चित्रकला

भारतीय चित्रकला के मूल स्त्रोत (संस्कृत साहित्य के उल्लेखों पर आधारित) *डॉ० भानुअग्रवाल* 400

कला *हंसकुमार तिवारी* 150

कला-दर्पण *वासुदेव स्मार्त* 250

समाजशास्त्र, दर्शन तथा मनोविज्ञान

समाजदर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीशसहाय श्रीवास्तव* 180

Drug Abuse : Problem and Prevention *C.D. Singh, R.S. Singh* 200

भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप और विकास *सं० डॉ० सत्येन्द्र त्रिपाठी* 60

ब्राह्मण-समाज का ऐतिहासिक अनुशीलन *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 200

भारद्वाज : पूर्वज और वंशज *विश्वनाथ भारद्वाज* 560

राष्ट्रीयता का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य *सुदर्शन पण्डा* 120

क्षत्रियों की उत्पत्ति एवं विकास *डॉ० सरोज रानी* 200

प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन *डॉ० चन्द्रदेव सिंह* 150

समाजशास्त्र *मॉरिस गिन्सबर्ग* 25

सामाजिक जनांकिकी *नीलकंठ शा० देशपांडे* 80

आधुनिक तर्कशास्त्र की रूपरेखा *डॉ० डी०ए० गंगाधर* 20

सामाजिक मनोविज्ञान *व०वि० अकोलकर* 25

अपराध के नये आयाम तथा पुलिस की समस्याएँ *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 50

पुलिसकर्मियों की समस्याएँ : समाजवैज्ञानिक अध्ययन *डॉ० विजयप्रताप राय* 300

भारतीय पुलिस *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 80

सामाजिक व्यवस्था में पुलिस की भूमिका *चमनलाल प्रद्योत* 40

चेतना, शिक्षा एवं संस्कृति *डॉ० अजब सिंह* 80

अरविंद-दर्शन की भूमिका *एस०के० मैत्रा* 30

सोमतत्त्व *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 100

मनोविज्ञान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य *डॉ० (श्रीमती) गायत्री* सजिल्द 150, अजिल्द 80

विकासवाद और श्री अरविन्द *डॉ० जयदेव सिंह* 20

Modern Indian Mysticism (3 Vols.) *Sobharani Basu* 150

शिक्षा

Educational Philosophy of W.H. Kilpatric *Pratibha Khanna* 300

Educational and Vocational Guidance in India *Dr. K.P. Pandey* (H.B.) 300, (P.B.) 150

Modern Indian Mysticism (3 Vols.) *Sobharani Basu* 150

भारत में शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन *डॉ० के०पी० पाण्डेय* (यंत्रस्थ)

Teaching of English in India *Dr. K.P. Pandey, Dr. Amita* (H.B.) 300, (P.B.) 150

शैक्षिक अनुसंधान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 100

शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम *डॉ० राजेश्वर उपाध्याय व डॉ० सरला पाण्डेय* सजिल्द 150 अजिल्द 80

शिक्षा मनोविज्ञान के मूल आधार *सत्यव्रत तिवारी* 50

सतत शिक्षा का समुदायिक स्वरूप *डॉ० योगेन्द्रनारायण मिश्र* 60

प्रारम्भिक कक्षाओं में विज्ञान-शिक्षण *अजयकुमार राय* 80

शिक्षा-सिद्धान्त एवं दर्शन *सत्यदेव सिंह* 40

भारतीय युवा-आक्रोश *सत्यदेव सिंह* 10

भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय *सं० डॉ० चन्द्रकला पाडिया* 150

संसार के महान शिक्षाशास्त्री *डॉ० इन्द्रा ग्रोवर* 60

महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त *आर०आर० रस्क* 80

वाणिज्य

सेविवर्गीय प्रबंध एवं औद्योगिक सम्बन्ध *डॉ० जगदीशसरन माथुर* 160

अर्थशास्त्र

अथशास्त्र मौखिकी *डॉ० सुशीलकिशोर श्रीवास्तव* 60

पत्रकारिता, जनसंचार, सिनेमा

संसद और संवाददाता (संसदीय रिपोर्टिंग) *ललितेश्वरप्रसाद सिंह श्रीवास्तव* 150

इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ० अर्जुन तिवारी* 60

पत्र, पत्रकार और सरकार *काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर* 120

प्रेस विधि *डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा* सजिल्द 150, अजिल्द 100

संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता *डॉ० अशोककुमार शर्मा* सजिल्द 300, अजिल्द 200

समाचार और संवाददाता *काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर* 80

संवाद संकलन विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50

स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पं० दशरथप्रसाद द्विवेदी *डॉ० अर्जुन तिवारी* 120

हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान *बच्चन सिंह* 40

आधुनिक पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* सजिल्द 80, अजिल्द 50

पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया *शिवप्रसाद भारती* 200

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और साहित्यिक पत्रकारिता *इन्द्रसेन सिंह* 120

महामना मालवीय और हिन्दी पत्रकारिता *लक्ष्मीशंकर व्यास* 50

The Rise And Growth of Hindi Journalism *Dr. R.R. Bhatnagar Ed. by Dr. Dhirendra Singh* 400

Mass Communication & Development *(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta* 250

Journalism by Old and New Masters " 250

Modern Journalism & Mass Communication " 250

सङ्गीत

राग जिज्ञासा *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 250

भारतीय सङ्गीत का इतिहास *डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह* 300

प्रणव-भारती *पं० ओङ्कारनाथ ठाकुर* 300

भारतीय सङ्गीतशास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन *डॉ० विमला मुसलगाँवकर* 400

Indian Music *Dr. Thakur Jaideva Singh* 450

Indian Aesthetics and Musicology *Dr. Premlata Sharma* 500

विज्ञान

विज्ञान-कथा *डॉ० एस०एन० घोष* सजिल्द 80, अजिल्द 50

प्राचीन भारतीय अणु एवं किरण विज्ञान (4 भागों में) *डॉ० अष्टभुजाप्रसाद पाण्डेय* 200

वैज्ञानिक अनुसंधान और आविष्कार *डॉ० रवीन्द्रप्रताप राव* 30

Geography

Electoral Geography of India *Dr. S.K. Dikshit* 250

भौगोलिक चिन्तन : उद्भव एवं विकास *डॉ० श्रीकांत दीक्षित* सजिल्द 150, अजिल्द 90

Zoology

Fishes of U.P. & Bihar *Dr. Gopalji Srivastava* (H.B.) 200, (P.B.) 100

Text Book : Physics

Practical Physics *Dr. C.K. Bhattacharya* (4 others) 60

Waves and Oscillations (Fourth Revised & Enlarged Edition) *Dongre & Bhattacharya* 120

Matrices & Its Applications *Dr. C.K. Bhattacharya* 15

English Literature

Laurence Sterne : A Critical Revaluation *Dr. Nand Kishore Lal* 150

The Mayor of Casterbridge *Thomas Hardy* 25
New Responses to T.S. Eliot *(Ed.) Dr. N.S. Srivastava* 80
Shakespearian Comedy *H.B. Charlton* 120
Shakespere : A Critical Study of His Mind & Art *Edward Dowden* 150

Text Books : English

Prose of Reason and Good Sense *(Ed.) Dr. M. Singh & others* 9
Essays : Impersonal and Personal *(Ed.) Dr. P.S. Awasthi & others* 25
Modern Essays *(Ed.) Dr. Rs. Tripathi & others* 30
The Realm of Gold (Poetry) *(Ed.) P.N. Singh & A.H. Abbasi*
Selected Modern Poetry *(Ed.) Prof. A.H. Beg & G.S. Dwivedi* 16
Modern English Essays *(Ed.) Dr. R.N. Pandey* 20
Twentieth Century Poetry *Shruti Srivastava* 30

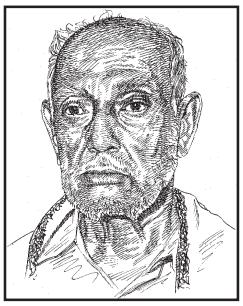

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थ

मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन) 300
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि 100
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2) 80
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र-साधना *रमेशचन्द्र अवस्थी* 50
परातंत्र साधना पथ 40
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा 250
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग (कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित) 20
भारतीय धर्म साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन 15
ज्ञानगंज 60
कविराज प्रतिभा 64
दीक्षा 60
श्री साधना 50
स्वसंवेदन 50
प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त 120
श्रीकृष्ण प्रसंग 250
काशी की सारस्वत साधना 35
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-1) 200
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-2) 120
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100
अखण्ड महायोग 50
क्रम साधना 60
भारतीय साधना की धारा 30
परमार्थ प्रसंग (प्रथम खण्ड) 150
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 20

पं० गोपीनाथ कविराज समकालीन संत-महात्मा

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नंदलाल गुप्त* 160
English Edition *In Press*
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
पुराणपुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120
नीम करौरी के बाबा *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 12
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50
Purana Purusha Yogiraj Sri Shyama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400

तंत्रसिद्ध पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी

पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी (जीवनी) 120
धर्म और उसका अभिप्राय 80
प्राणमयं जगत *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 22
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद 100
आत्मबोध *श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल* 30
श्रीमद्भगवदगीता (3 खण्डों में) " 375
विल्व-दल (द्वितीय खण्ड) *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 25
आश्रम चतुष्टय *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 25
मोक्ष साधन या योगाभ्यास *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 15
दिनचर्या *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 20
आत्मानुसंधान और आत्मानुभूति " 20
Purana Purusha Yogiraj Shri Shyama Charan Lahiree (*Biography*) 400
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150

पं० अरुणकुमार शर्मा के ग्रन्थ

मारणपात्र 250
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी 180
वह रहस्यमय कापालिक मठ 180
मृतात्माओं से सम्पर्क 200
परलोक विज्ञान 300
कुण्डलिनी शक्ति 250
तीसरा नेत्र (भाग-1) 250
तीसरा नेत्र (भाग-2) 300
मरणोत्तर जीवन का रहस्य (भाग-1) 35

अन्य आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रन्थ

सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60
सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा* 655
जपसूत्रम (प्रथम तथा द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* (प्रत्येक) 150
सोमतत्व *सं. प्रो. कल्याणमल लोढ़ा* 100
वेद व विज्ञान *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 80

चिंतक, संत, योगी, महात्मा

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ. गिरिराज शाह* 100
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ. अर्जुन तिवारी* 50
भारत के महान योगी (10 भाग) 5 जिल्द *विश्वनाथ मुखर्जी* (प्रत्येक) 100
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
पूर्वांचल के संत-महात्मा *परागकुमार मोदी* 60
महाराष्ट्र के संत महात्मा *ना.वि. सप्रे* 120
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
दयानन्द जीवन गाथा *भवानीलाल भारतीय* 150
आदि शंकराचार्य *डॉ० जयराम मिश्र* 80
एकता के दूत शंकराचार्य *डॉ. दशरथ ओझा* 125
गुरुनानक देव : जीवन और दर्शन *डॉ. जयराम मिश्र* 125
स्वामी रामतीर्थ : जीवन और दर्शन " 200
चैतन्य महाप्रभु *अमृतलाल नागर* 90
भगवान बुद्ध *धर्मानन्द कोसाम्बी* 160
करुणामूर्ति बुद्ध *गुणवंत शाह* 25
महामानव महावीर *गुणवंत शाह* 30
मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन *डॉ. रघुवंश* 160

श्रीमद्भगवद्गीता

गीता रहस्य *लोकमान्य तिलक* 300
हिन्दी ज्ञानेश्वरी *संत ज्ञानेश्वर, अनु. ना.वि. सप्रे* 180
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्ड) *श्यामाचरण लाहिड़ी* 375
गीता प्रवचन *विनोबा भावे* 20
गीता प्रबन्ध *श्री अरविन्द* 150
गीता-तत्त्व-बोध (खण्ड 1-2) *बालकोबा भावे* 300
कृष्ण का जीवन संगीत *गुणवंत शाह* 300
कृष्ण और मानव सम्बन्ध *हरीन्द्र दवे* 80
श्रीमद्भगवद्गीता *शांकरभाष्य, नीलकण्ठी* 400
श्रीमद्भगवद्गीता (2 भाग) *मधुसूदन टीका, हिन्दी व्याख्या* 1250
यथार्थगीता *स्वामी अड़गड़ानन्द* 150
भारत सावित्री (3 भाग) *वासुदेवशरण अग्रवाल* 80

उपन्यास

पांचाली (नाथवती अनाथवत्) *डॉ० बच्चन सिंह* 125
हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य *युगेश्वर* 140
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) *प्रभुदयाल मिश्र* 120
तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120
चरित्रहीन *आबिद सुरती* 180
लोकऋण *विवेकी राय* 80
बबूल *विवेकी राय* 40
कलजुगी उपनिषद् *दयानंद वर्मा* 175
जिंदाबाद मुर्दाबाद *दयानंद वर्मा* 50

पत्र-पत्रिकाएँ

धरती और चाँद (मासिक)
सम्पादक : अवतेंश रजनीश
सम्पर्क : प्रकाशनगर, रायबरेली
(वार्षिक 55.00)

संधान (अनियमित)
सम्पादक : जीवनप्रकाश जोशी
सम्पर्क : 3-ए-1, हिन्दुस्तान टाइम्स अपार्टमेंट्स
मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली
(निःशुल्क)

अमृत कलश (स्मारिका)
सम्पादक : चन्द्रबली 'हंस'
सम्पर्क : शशि निकेतन, आमघाट, गाजीपुर

अभिनव प्रसंगवश (अर्द्धवार्षिक)
रामदरश मिश्र केन्द्रित विशेषांक
सम्पादक : डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ
सम्पर्क : 14/106 राजविला, मोती मिल कम्पाउण्ड
अलीगढ़ (25.00)

दाल रोटी (त्रैमासिक)
सम्पादक : अक्षय जैन
सम्पर्क : 13 रशमन अपार्टमेंट
उपासनी हास्पिटल के ऊपर, एस०एन० रोड,
मुलुण्ड (पं०) मुम्बई (वार्षिक 50.00)

भारतवाणी (मासिक)
सम्पादक : चंदूलाल दुबे
सम्पर्क : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
डी०सी० कम्पाउण्ड, धारवाड़

राष्ट्रभाषा (मासिक)
सम्पादक : प्रो० अनन्तराम त्रिपाठी
सम्पर्क : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
(वार्षिक 80.00)

संकल्परथ (मासिक)
सम्पादक : राम अधीर
सम्पर्क : 108/1, शिवाजी नगर,
भोपाल-462016
(वार्षिक 120.00)

मसिकागद (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० श्याम सखा 'श्याम'
सम्पर्क : 'पलाश', 12 विकास नगर
रोहतक
(वार्षिक 100.00)

कवि सभा दर्पण (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० शान्तिस्वरूप 'कुसुम'
सम्पर्क : 30/106, गली नं० 7,
विश्वास नगर, शाहदरा,
दिल्ली-32 (वार्षिक 60.00)

शक्ति स्वर
सिंगरौली सुपर थर्मल पावर स्टेशन की गृह पत्रिका
सम्पादक : अतर सिंह गौतम
संस्थान के कर्मियों में रचनात्मकता जागृत करने का
प्रयास, सुन्दर प्रकाशन मुद्रण।

प्रिय संपादक (मासिक)
सम्पादक : उग्रनाथ नागरिक
सम्पर्क : एल-5/185, सेक्टर-एल०, अलीगंज
लखनऊ (वार्षिक 24.00)

कविताश्री (मासिक)
सम्पादक : नलिनीकान्त
सम्पर्क : अण्डाल, पश्चिम बंगाल-713321
(वार्षिक 30.00)

मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् पत्रिका (मासिक)
सम्पादक : डॉ० वि० राम संजीवय्या
सम्पर्क : 58 वेस्ट ऑफ कार्ड रोड
राजीवनगर
बेंगलूर-560 010
(वार्षिक 50.00)

गुर्जर राष्ट्र वीणा (मासिक)
सम्पादक : अरविन्द जोशी
सम्पर्क : राष्ट्रभाषा हिन्दी भवन
एलिस ब्रिज
अहमदाबाद-6
(वार्षिक 100.00)

मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार के अनुदान व सहयोग से भारतीय संस्कृति संस्थान, चण्डीगढ़ 'मानव-मूल्यपरक शब्दावली का विश्वकोश' बना रही है। राष्ट्रभाषा को समृद्ध करने में जो विद्वान इसमें सहयोग देना चाहें, सम्पर्क करें (उचित पारिश्रमिक का भी प्रावधान है)—

धर्मपाल सैनी
166, सेक्टर 19-ए,
चण्डीगढ़-160019
फोन : 780657

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 3 **जून-जुलाई 2002** **अंक : 6-7**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2002

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

✆ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in